ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

मार्च–2018

वेदानुयायी, ईश्वरभक्त, चक्रवर्ती सम्राट्
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र जी

प्रकाशन का 20वां वर्ष

₹10

क्षेत्र की शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करेगी इण्डस ग्लोबल एकेडमी

इण्डस ग्लॉबल एकेडमी के निदेशक श्री सुभाष श्योराण से संक्षिप्त साक्षात्कार

आप गत 25 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में हैं। इण्डस के अनेक संस्थान सफलतापूर्वक शिक्षा के क्षेत्र में योगदान कर रहे हैं। ऐसे में इण्डस ग्लोबल एकेडमी की क्या आवश्यकता अनुभव हुई?

25 वर्ष से शिक्षा के क्षेत्र में हूँ। 2000 ई० में हमारे प्रेरणास्रोत स्व० चौधरी मित्रसेन जी आर्य के मार्गदर्शन में सिन्धु एजुकेशन ट्रस्ट की स्थापना हुई। चौधरी मित्रसेन जी ने एक विचार हमें दिया। शिक्षा मात्र डिग्री नहीं है। शिक्षा वह है जो मानव को अज्ञान, अभाव और दु:ख के बंधन से मुक्त करे। मनुष्य संस्कार और सदाचरण के साथ-साथ भौतिक जीवन में भी सफलता प्राप्त करे और समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करे। वर्तमान में हमारे मार्गदर्शक माननीय कै० रुद्रसेन जी के वरदहस्त से इण्डस शिक्षण संस्थाएँ इसी विजन पर काम करती हैं और इसी कार्यप्रणाली पर काम करते हुए हमारे संस्थान के माध्यम से देश को हजारों जिम्मेवार नागरिक दिये हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में सफल और गौरवपूर्ण जीवन जी रहे हैं। आज इण्डस शिक्षण संस्थाओं की समाज में एक अलग पहचान है, एक विश्वसनीयता है। इस संस्थान के माध्यम से छत्तीसगढ़, उड़ीसा, मध्यप्रदेश सहित पूरे देश में सफल और प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाएं समाज को सर्वश्रेष्ठ योगदान कर रही हैं। आज जीवन बहुत तेजी से बदल रहा है। हर क्षेत्र में एक जबरदस्त प्रतिस्पर्धा है। विकास की दौड़ में जिन जिन स्किल्स की आवश्यकता है, उसका प्रशिक्षण हमारी नई पीढ़ी को उनकी शैक्षणिक प्रगति के साथ ही देना होगा। इसलिये हमने इण्डस ग्लोबल एकेडमी की योजना बनाई, कि हम बच्चों को वह वातावरण दें कि वे प्रतियोगिता को हौवा न समझें और सहज भाव से उनका सामना करें। इण्डस ग्लोबल एकेडमी पाठ्यक्रम के साथ-साथ बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये मानसिक और बौद्धिक रूप से तैयार करेगी, इसके लिये हम उन्हें राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षक और सुविधाएँ उपलब्ध करायेंगे।

जींद जैसे शैक्षिक रूप से पिछड़े क्षेत्र में, वह भी ग्रामीण क्षेत्र में-- बहुत चुनौतियाँ रहेंगी। फिर क्षेत्र के लिए आपका यह प्रयोग बिल्कुल नया है। आप कितने आश्वस्त हैं इसकी सफलता के लिये?

देखिये, स्व० चौधरी मित्रसेन जी आर्य ने हमें जो मिशन दिया उसके साथ हमें एक मूल मंत्र भी दिया, जिसे हमारे मार्गदर्शक माननीय कै० रुद्रसेन जी ने आत्मसात किया, वह है - दृढ़ संकल्प, पूर्ण पुरुषार्थ और ईश्वर विश्वास। सारे इण्डस संस्थान इसके उदाहरण हैं। जहाँ तक पिछड़े क्षेत्र की बात है, हमें अब इस धारणा को बदल लेना चाहिये। क्षेत्र में कमी है तो अच्छे शिक्षण संस्थानों की, प्रतिभाओं की जींद में कोई कमी नहीं है। यह हमने अपने 25 वर्ष के अनुभव से जाना है। और आज तो इण्टरनेट का युग है। सारा विश्व एक परिवार ही बन गया है। कोई दूर नहीं है। कै० रुद्रसेन जी के आशीर्वाद से हम स्थानीय स्तर पर वे सुविधाएँ और वातावरण देंगे जिनके लिए हमारी प्रतिभाओं को दिल्ली कोटा आदि की दौड़ लगानी पड़ती है। अभिभावकों के लिये यह बड़ी दुविधा की स्थिति होती है। बच्चों के कैरियर के लिये अनेक आशंकाओं/चिन्ताओं के चलते उन्हें अपने कलेजे के टुकड़ों को दूर भेजने का कठोर निर्णय लेना पड़ता है। बच्चे भी घर से दूर तनावपूर्ण और असुरक्षित जीवन जीने को मजबूर होते हैं। लड़कियों के मामले में तो और भी ज्यादा समस्याएँ होती हैं। हम इसकी सफलता के लिये पूर्ण आश्वस्त हैं बल्कि क्षेत्र की एक मूलभूत आवश्यकता को देखते हुए ही हमने यह कदम उठाया है।

इण्डस ग्लोबल एकेडमी के रूप में आपका क्या विजन रहेगा? कुछ संक्षेप में बताने का कष्ट करेंगे।

हाँ, बच्चे को पाठ्यविषय रटवा देना ही शिक्षा नहीं है, आवश्यक है उसकी समझ को विस्तार देना और कौशल विकास। पाठ्यक्रम के साथ कौशल विकास, प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी और व्यक्तित्व विकास। इन तीनों क्षेत्रों को बराबर का महत्व देकर उच्च स्तरीय परिणाम प्राप्त करना और राष्ट्र की सेवा के लिये योग्य नागरिक तैयार करना, यह हमारा मिशन है। हम इसके लिए अनुभवी संरक्षण में प्रगतिशील वातावरण देंगे। क्षेत्र में योग्यतम प्रशिक्षक उपलब्ध करायेंगे और बच्चे के मनोविज्ञान और क्षमताओं के आधार पर उसे अपने कैरियर का क्षेत्र चुनने के निर्णय में सहायता देकर उसका सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शन उपलब्ध करायेंगे। साथ ही उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए- योग और आध्यात्मिक गतिविधियों को भी नियमित स्थान देंगे।

इण्डस ग्लोबल एकेडमी का आधारभूत ढांचा क्या रहेगा?

एकेडमी जींद से रोहतक मार्ग पर 15 किलोमीटर ग्राम किनाना में स्थित है। प्रकृति की गोद में स्थित इसका विस्तृत और सुसज्जित कैम्पस शिक्षा के पूर्णतया अनुकूल है। आवासीय और दैनिक आवागमन; दोनों विकल्प रहेंगे। दैनिक आवागमन के लिए यातायात सुविधा उपलब्ध रहेगी। आवासीय व्यवस्था में पूर्णतया सुरक्षित प्रदूषण रहित वातावरण में नियमित, अनुशासित गुरुकुलीय दिनचर्या और उच्च स्तरीय मानकों के अनुरूप सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। योग्य बच्चों को छात्रवृत्ति के रूप में आर्थिक सहायता भी प्राप्त होंगी। कुल मिलाकर यह एक सम्पूर्ण शिक्षण संस्थान रहेगा। हम विश्वास दिलाते हैं कि एकेडमी में प्रवेश दिलाकर अभिवावक भी स्वयं को अपने बच्चों के भविष्य के प्रति चिन्तामुक्त अनुभव करेंगे।

बहुत बहुत शुभकामनाएँ। आपका 25 वर्ष का अनुभव जींद की भावी पीढ़ी के लिये वरदान सिद्ध हो, बातचीत के लिये समय निकालने के लिए आभार! साथ ही आप प्राईवेट स्कूल संघ के प्रदेश अध्यक्ष चुने गए हैं, इसके लिये भी आपको बहुत बहुत बधाई।

आपका भी बहुत बहुत धन्यवाद! शांतिधर्मी के सभी पाठकों को भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

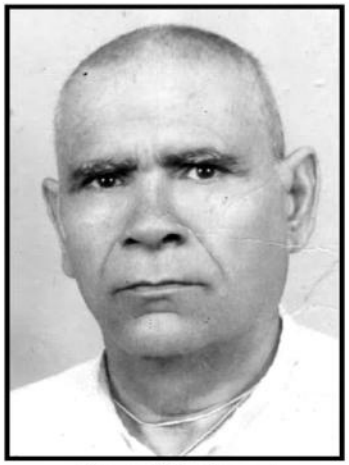

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक
पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष 09416253826)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
विधि परामर्शक : डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
कार्यालय व्यवस्थापक: रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

सहयोग राशि
एक प्रति : १०.०० रु.
वार्षिक : १२०.०० रु.
आजीवन : १०००.०० रु.

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

मार्च, २०१८ ई०
वर्ष : २० अंक : २ चैत्र २०७५ विक्रमी
सृष्टि संवत्-१९६०८५३११९, दयानन्दाब्द : १९५

क्या? कहाँ?....

आलेख

सामवेद अनुशीलन (भूख का उपभोग) ७
सत्य के लिये बलिदान (पुनर्प्रकाशन शांतिप्रवाह) ८
लोकाराधक मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम १०
बाल्मीकि की दृष्टि में राम ११
क्या भगतसिंह नास्तिक थे! (राष्ट्र चिन्तन) १२
नारी का पुरोहित कर्म : अधिकार भी व्यवहार भी १५
यौनापराध की घटनाएँ : समाज के लिये चिन्तनीय १७
मानिनी (इतिहास कथा) १८
त्याग भाव (आत्मिक उन्नति) २१
जीवन मृत्यु रहस्य एवं आनन्दमय मोक्ष २२
रसोई में आदर्श औधालय २४
लस्सी एक अमूल्य औषधि २४
लघु-कथा/प्रसंग असन्तोष-२३, राजा का बकरा/तीन आदमी-२७
कविता : २७, २८, २९
स्थायी स्तम्भ : प्रेरणा पथ-६, बाल वाटिका-२६, भजनावली-२८

Find us on facebook
https://www.facebook.com/ShantidharmiHindiMasik

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द-१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२-५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

गुरु की टांग

❐सहदेव समर्पित

❖आपने भी गुरु और दो मूर्ख शिष्यों की वह कथा सुनी होगी जब वे दोनों गुरु के पैर दबा रहे थे। दोनों ने एक एक टांग बांट ली। गुरु जी ने एक टांग दूसरी के ऊपर रखी तो दूसरी टांग के मालिक शिष्य की भावनायें भड़क गईं। उसने दूसरी टांग को उठाकर पटक दिया। पहले वाले को यह अपने मौलिक अधिकारों का हनन लगा और उसने पास में रखा हुआ डंडा उठाकर दूसरी टांग पर दे मारा। फिर तो दोनों मूर्ख गुरु की दोनों टांगों को ताबड़तोड़ पीटने लगे और गुरु जी चीखने लगे। किसी तरह दोनों को रोक कर गुरु जी ने कहा- अरे मूर्खो! ये दोनों टांगें मेरी ही हैं, जिनको तुम पीट रहे हो।

❖ठीक कुछ ऐसी ही स्थिति आज देश की दिखाई दे रही है। देश में असहमति के गिरते हुए स्तर का खुलकर प्रदर्शन हो रहा है। और इसका शिकार हो रही हैं उन महापुरुषों की मूर्तियाँ, जिनके कार्यों से प्रेरणा लेने के लिये और स्मृतियों को स्थिर करने के लिये कुछ समझदार लोगों ने लगवाया होगा। इससे हानि तो अन्ततः देश के विचार और देश की भावना की ही हो रही है। मूर्ति टूटने से न तो कोई आदमी मरता है और न उसका विचार मरता है। पर यह तो एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिये मूर्तियों को माध्यम बनाया जा रहा है। यह वैसी ही स्थिति है जैसे दो मूर्ख शिष्य अपने गुरु की दोनों टांगों को पीट रहे हों।

❖महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा का खण्डन किया। बहुत से लोगों ने इसका अर्थ समझा। मूर्ति पूजा के खण्डन का अर्थ है सर्वव्यापक ईश्वर के स्थान पर उसकी मूर्ति बनाना और उसको ईश्वर समझकर व्यवहार करना। सर्वज्ञ चेतन ईश्वर के स्थान पर जड़ वस्तुओं की पूजा करना। इसके लिए उन्होंने शास्त्रीय प्रमाण और युक्तियाँ दीं। लेकिन वे मूर्तियाँ तोड़ने के पक्षधर नहीं थे। एक स्थान पर उनके श्रद्धालु एक मुस्लिम अधिकारी ने मार्ग के निर्माण में आड़े आने वाली मढ़िया के बारे में कहा- महाराज कहें तो इसको तुड़वा दूँ? उन्होंने कहा- नहीं, मैं इनको तुड़वाने के पक्ष में नहीं हूँ? मैं जड़ पूजा को लोगों के हृदय से निकालना चाहता हूँ। मूर्ति संबंधी स्वामी दयानन्द का सन्दर्भ धार्मिक क्षेत्र से था। यह जड़ पूजा लोगों के हृदय से तो निकली नहीं, बल्कि इसका कथित राजनीति में संक्रमण हो गया। जिसकी मूर्ति का कद जितना बड़ा, वह उतना ही बड़ा महापुरुष! उसकी विद्या, ज्ञान, समर्पण, त्याग और बलिदान का कोई मूल्य नहीं!

❖ईश्वर के स्थान पर काल्पनिक मूर्ति की पूजा और किसी व्यक्ति के स्थान पर उसकी मूर्ति की पूजा, इनमें क्या अन्तर है? मूर्तिपूजा के मिस श्रेष्ठ-अश्रेष्ठ परम्पराओं का घोर विरोध करने वाले विचारक भी घोर मूर्तिपूजक हो गए? लेनिन भी यहाँ खड़ा था, यह देशवासियों को अभी पता चला। लेनिन के प्रभाव में आकर भगतसिंह को नास्तिक बताने वाले एक मित्र बता रहे थे कि वे लोग ३५ लाख रूपये की लागत से भगतसिंह की सबसे ऊँची मूर्ति बना रहे हैं।

❖आज गुरु की टांग की हालत पहले से ज्यादा खराब है। यह एक बहुत शर्मनाक स्थिति है कि हमने देश के निर्माताओं को मूर्तियों, जातियों, मजहबों में बांट लिया है। बांटना भी कोई बढ़िया बात नहीं है। पर शर्म की बात तो यह है कि दूसरी टांग को पीटना शुरु कर दिया है। यदि देश के देवताओं की मूर्तियाँ बनती हों तो भारतवासियों के हृदय मन्दिर में भगतसिंह का स्थान बहुत ऊँचा है। उन्होंने कहा- भगतसिंह नास्तिक था? फिर भी भगतसिंह का स्थान कमतर नहीं हुआ। उन्होंने कहा- भगतसिंह लेनिनवादी था फिर भी लोग भगतसिंह की पूजा करते हैं। लेकिन जो भगतसिंह वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद और बिस्मिल को अपने कार्यों और लेखनी से सर्वदा सम्मान देते रहे, उनको कायर, देशद्रोही कहना, और उनके बलिदान को कमतर आंकना- गुरु की दूसरी टांग को पीटने के समान ही है। जिस आस्तिक देशभक्त लाला लाजपतराय के अपमान को भगतसिंह ने देश का अपमान समझा और उस अपमान का बदला लेने के लिये अपनी जान की बाजी लगाई उन आस्तिक देशभक्तों के बलिदान को कमतर आंकना क्या देशद्रोह से कम है?

❖ये दोनों टांगें देश की ही हैं। पहले भी अलग अलग भगवान बने, अलग मूर्तियाँ मन्दिर बने। विघटन हुआ। एक दूसरे के राज्य और मन्दिर टूटते देख लोग तमाशा देखते रहे। देश गुलाम हुआ। आज भी वही स्थितियाँ बनती नजर आ रही हैं। क्षणिक स्वार्थों के कारण केवल दोनों टांगें दिखती हैं पूरा गुरु दिखता ही नहीं। इसी चक्कर में इतिहास बिगाड़ा जा रहा है, परम्परायें बिगाड़ीं जा रही हैं, इस देश की असल संस्कृति की तस्वीर बिगाड़ी जा रही है। हमारे आदर्शों पर लांछन लगाये जा रहे हैं। यह देश राम और कृष्ण का देश है, इस बात के सबूत मांगे जा रहे हैं। और सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि विश्व गुरु भारत माता चिल्ला भी नहीं पा रही है कि अरे मूर्खो! ये दोनों टांगे मेरी ही हैं।

आपकी सम्मतियाँ

शान्तिधर्मी के फरवरी अंक में शांतिप्रवाह- पुनः प्रकाशन में आत्मनिरीक्षण शीर्षक लेख को पढ़ते हुये मानो स्वयं का आत्मनिरीक्षण हो गया व चिंतन की गहराई में से प्राप्त होने वाले मोतियों ने आत्मविभोर कर दिया। इस लेख से स्व० पण्डित चन्द्रभानु जी के पाण्डित्य का अवलोकन उनके प्रति श्रद्धा को बहुत बढ़ा देता है। नमन है उनके कार्यों को! इसके साथ सामाजिक उन्नति, आत्मिक उन्नति, जीवन दर्शन, स्वास्थ्य चर्चा व इतिहास आदि उपशीर्षकों के लेख बहुत प्रेरणादायक व ज्ञानवर्धक हैं। बहुत धन्यवाद!

परमिल कुमार 'भाई'
ग्राम पोस्ट मोहदीनपुर, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

✉

मेरी कविता 'कुछ पूछ रहे हैं, हमें जवाब चाहिए' को शांतिधर्मी में स्थान देने हेतु अनंत आभार! मैंने इस पत्रिका के अब तक केवल ३ ही अंक पढ़े हैं, किन्तु लगता है कि सचमुच इसमें कई जानकारियाँ रहस्यों का भेद खोलती हैं। इस हेतु बहुत-बहुत साधुवाद। रामजस कॉलेज पर लेख मेरी इसी बात को पुष्ट करता है। फरवरी २०१८ का अंक सदा की भाँति अत्यंत सुंदर और ज्ञानवर्धक है। 'हमारी संस्कृति यज्ञीय है।' यह एक उदाहरण है। मैं स्वयं यज्ञ के प्रचार-प्रसार हेतु सदा प्रयासरत रहती हूँ तथा चाहती हूँ कि इस दिशा में किए गए और भी नवीनतम शोध आदि पर आधारित लेख भी इस पत्रिका में सम्मिलित हों। लस्सी पर लेख मेरे पी-एच०डी० शोधकार्य में सहायक सिद्ध होगा, उसमें दुग्ध से उत्पन्न पदार्थों की विस्तृत जानकारी बेहतरीन लगी। इसी अंक में सम्पादक महोदय की कविता पढ़ी, अति सुंदर! इस अंक को पढ़कर मेरी एक सखी प्रभावित हुई और उसी के शब्दों में कहूँ तो 'दीदी आज समाज में ऐसी ही पत्रिकाओं की आवश्यकता है!' निश्चित ही आवश्यकता है घर-घर पहुँचाने की और इस वैदिक ज्ञान-विज्ञान से सबको परिचित कराने की। यदि इसकी पीडीएफ प्रति भी उपलब्ध हो सके तो बहुत सुंदर प्रयास होगा, क्योंकि मैं चाहती हूँ मैं इसे मेरे अन्य परिचित लोगों तक भी पहुंचा सकूँ। मछली वाला लेख भी अद्‌भुत विज्ञान प्रस्तुत करता है।

लतिका चावड़ा 'स्वर्णलतिका' अनुवादक/ कवयित्री
पी-एच०डी० शोधार्थी
महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय,
वर्धा, महाराष्ट्र- ४४२००३

बहुत ही सुन्दर! अति प्रशंसनीय! आपकी मेहनत, लगन और कर्मठता का ही परिणाम है शांतिधर्मी का उच्च कोटि का प्रकाशन। आपको बहुत बहुत धन्यवाद! आभार! शुभकामनायें!

पं० सुमित्रदेव आर्य भजनोपदेशक
ग्रा० लुण्ठी, पो० उमाही कलां
जि० सहारनपुर-२४७३४१

✉

मुखपृष्ठ पर प्रकाशित विभिन्न महापुरुषों के चित्र प्रेरणादायक हैं। आत्मनिवेदन में परोपकार का उत्सव में हमारी यज्ञीय संस्कृति पर प्रकाश डाला गया है। यज्ञ का तात्पर्य सभी का भला करते रहने से है। यह जीवन एक यज्ञ है। हमारे प्रमुख त्योहारों में भी यज्ञ की भावना मुख्य है। इस प्रेरक सम्पादकीय के लिये साधुवाद! प्राचार्या नीरू जिन्दल की रचना आशा का दीपक प्रेरणादायक है। वर्ण व्यवस्था गुण कर्म के अधीन, लुहारु के संघर्ष की गौरवगाथा, लस्सी एक अमूल्य औषधि आदि आलेख उपयोगी और ज्ञानवर्धक हैं। डॉ० स्वर्ण किरण की गजल अच्छी लगी।

प्रो० शामलाल कौशल
975-बी/२० ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१

✉

वैदिक धर्म और राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार प्रसार में अहर्निश संलग्न आपको सादर अभिवादन! शांतिधर्मी पत्रिका के प्रकाशन के बीसवें वर्ष में हार्दिक शुभ कामनायें।

रामपाल शास्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली

✉

हमारी शांतिधर्मी पत्रिका के गौरवपूर्ण प्रकाशन की बीस वर्ष की गौरवपूर्ण सफलता की यात्रा के लिये आपको पूरे परिवार सहित हार्दिक बधाई।

प्रताप आर्य भजनोपदेशक, सहारनपुर

✉

शांतिधर्मी के प्रकाशन के बीसवें वर्ष में आप सभी शांतिधर्मी परिवार को बधाई। आपकी लग्न व मेहनत प्रणम्य है। बहन सत्यसुधा शास्त्री को भी इसमें भरपूर श्रेय है, अतः उनको भी बहुत बहुत बधाई।

सुदेश आर्या शास्त्री
ग्रा० पो० चिड़ौद जिला हिसार

✉

प्रकाशन के बीसवें वर्ष की बधाई भाई जी, आज ही पत्रिका मिलते ही बच्चों ने पहले पढ़ने के लिए झगड़ा किया। रोचकता के कारण बच्चे पहले पढ़ते हैं।

केवल सिंह जुलानी,
संयोजक जनहित विकास परिषद हरियाणा

सिंहावलोकन

शांतिधर्मी पत्रिका मानवता का अमृत प्याला है।

❒**महीपाल आर्य पूनिया**, संस्कृत प्राध्यापक, ग्राम पोस्ट मतलोडा, जिला हिसार

आज का युग प्रचार का युग है। जहाँ पत्र-पत्रिकाएं संसार की वर्तमान स्थिति का दर्पण हैं, वहाँ समाज में घटित घटनाओं का, परिवार और समाज के नव निर्माण का दस्तावेज भी हैं, जन-जागरण के सर्वश्रेष्ठ, सर्वसुलभ, सस्ते तथा सुगम साधन हैं। जन-जागरण के वैतालिक, सजग प्रहरी पत्र-पत्रिकाएं किसी भी संस्था अथवा संगठन की आत्मा मानी जाती हैं, उसकी छवि मानी जा सकती हैं। डैन ब्रॉल ने ठीक ही लिखा है-'पत्र-पत्रिकाएं अव्यवस्था का उचित हथियार हैं।' जो कार्य दस बैठकें व बीस भाषण नहीं करते, उस कार्य को अकेली एक पत्रिका पलक झपकते कर देती है। सामाजिक उन्नति, जीवन दर्शन, आत्मिक उन्नति, इतिहास व स्वास्थ्य की जानकारी देने वाली पत्रिका का तो कहना ही क्या! लोकप्रियता के पथ पर अग्रसर ऐसी पत्रिकाएं सहस्रों का चरित्र निर्माण करती हैं व विचार देती हैं। ऐसी ही समाजोत्थान, जन-जागरण अभियान में नव प्राण फूंकती पत्रिका का नाम है 'शान्तिधर्मी'।

स्व० पण्डित चन्द्रभानु जी ने मूलत: एक आर्य भजनोदेशक होते हुए १९९९ में 'शान्तिधर्मी' निकालने का साहसिक निर्णय लिया। जन-सेवा व्रत लेकर दो मोर्चों पर संघर्ष करना कोई आसान काम नहीं है। उन्होंने सन् १९५१ से २०१४ तक भजनोपदेशक के रूप में तथा १९९९ से २०१४ तक लेखक के रूप में (दोनों ही क्षेत्रों में) सफल उत्तरदायित्व निभाया। आर्यसमाज के इतिहास में किसी भजनोपदेशक द्वारा प्रकाशित यह एकमात्र पत्रिका है। सभंवत: उन्हें आभास था कि यह मार्ग कितना कंटीला व दुसाध्य है। वे जानते थे कि यह सरल, सहज व सुलभ नहीं हैं और ऐसी स्थिति में तो बिल्कुल ही नहीं जहाँ आय का कोई स्रोत न हो। यह मार्ग परेशानियों, दुश्वारियों, झंझटों, विरोधों, आशंकाओं व जटिलताओं से भरा है। इसमें संघर्ष ही संघर्ष है, कोई प्राप्ति नहीं। हाँ, इतना अवश्य है कि यह उच्च कोटि का सेवा मार्ग है, जिसमें यश की वर्षा होती है। उन्होंने परमात्मा से एक प्रार्थना करते हुए समाज की सेवा 'शांतिधर्मी' के माध्यम से यह समर्पण करते हुए प्रारंभ की थी कि-'हे प्रभु! सेवा के इस पथ में मुझे अपने दोषों का पता रहे और आडम्बर, अभिमान और आकर्षण मुझे सत्य पथ से भटका न पाएं।'

यही कारण है कि उनके सम्पादन से सुशोभित पत्रिका का देश-विदेश के विद्वानों, विचारकों, चिन्तकों, मनीषियों में अत्यधिक सम्मान हुआ। शांतिधर्मी के माध्यम से गद्य लेखन में महाशय चन्द्रभानु जी ने जो हाथ दिखाए उसका कोई सानी नहीं। उनका हर आलेख अत्यन्त मार्मिक और प्रेरणादायक होता था। इसके उन्नयन का आकांक्षी मैं इस बात को सम्यक्तया जानता हूँ कि स्व० पं० चन्द्रभानु जी ने समाज-सेवा के लिये ही इसका सफल संचालन किया। उनमें किसी प्रकार के नेतृत्व की कोई लालसा या महत्वाकांक्षा नहीं थी। उन्होंने सोए हुए समाज को जाग्रत करने के लिए और वैदिक प्रचार-प्रसार के लिये आई विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति रखते हुए इस माध्यम को अपनाया। काल के थपेड़ों से लड़ते हुए महाशय चन्द्रभानु जी ने इसे शीर्ष स्थान पर ला खड़ा कर दिया। मुझे प्रसन्नता है कि आज भी यह पत्रिका उनके सुपुत्र श्री सहदेव जी शास्त्री द्वारा उनके आदर्शों की संवाहिका बनकर नियमित रूप से हर मास प्रकाशित हो रही है। इसके लिए मैं अन्त: करण से सम्पादक मण्डल को कोटिश: बधाई देता हूँ। शांतिधर्मी समाज और परिवार का प्रहरी है, चौकीदार है, संदेशवाहक है और सब प्रकार से शुभ चिन्तक है। शान्तिधर्मी के माध्यम से सम सामयिक लेखों द्वारा भावी पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है। अतीत के इतिहास से, वेद-विषयक ज्ञान से आबाल वृद्ध, वनिता, युवा शक्ति को शिक्षित किया जा रहा है। सही मायने में इसके लेखों के भाव ऊँचे हैं। वैदिक विद्वान यथा सामर्थ्य लेखनी का सहयोग तो दे ही रहे हैं बल्कि सदस्यता अभियान में भी सहयोग कर रहे हैं। शान्तिधर्मी ऐसी पत्रिका है जिसमें वैदिक मन्तव्यों के विरुद्ध घृणित शक्तियों द्वारा रचे जाने वाले षड्यन्त्र का पर्दाफास किया जाता है। प्रबुद्ध सहयोगी पाठकों की संख्या बढ़ाने के लिये निरन्तर प्रयासरत रहें ताकि वैदिक विचारों और कार्यों का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो सके और यह पत्रिका देश में उभर रहे व्यक्तिवाद, अधिनायकवाद, साम्प्रदायिकता, पृथकतावाद और रूढ़िवाद पर प्रहार करती रहे।

शांतिधर्मी का तेज वैदिक मन्तव्यों का उजाला है।
शांतिधर्मी का तेज आले से आला है।
क्या बयां करूं इस पत्रिका की हकीकत का।
यह पत्रिका मानवता का अमृत प्याला है।

भूख का उपभोग

-लेखक: पं० चमूपति

अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यंसद्विश्वं न्याऽत्रिणम्।
अग्निर्नोवꣳसते रयिम्।।

ऋषि:-भरद्वाज:=अन्न द्वारा पालने वाला।

(अग्नि:) यज्ञाग्नि (तिग्मेन) अपने उग्र (शोचिषा) तेज से (विश्वम्) सब (अत्रिणम्) पेटू स्वार्थियों को (नियमत्) वश में रखे। (अग्नि) यज्ञाग्नि (न:) हमें (रयिम्) धन-धान्य का आनन्द (वंसते) देती है।

धन न तो रुपए-पैसे का ही नाम है, न उस खाने-पीने की सामग्री का जिसका उपभोग धनी लोग करते प्रतीत होते हैं। 'रयि' तो नाम उस आनन्द का है जो उपभोग के इन साधनों से मिलता है। साधन सभी विद्यमान हों परन्तु उपभोक्ता में उपभोग की शक्ति न हो तो वह साधन विद्यमान हुए न हुए एक से हैं। भोजन का स्वाद लेने के लिए जहाँ भोजन की आवश्यकता है, वहाँ भूख की भी। अधिक खाने से अजीर्ण हो जाता है, और इस अवस्था में मीठा भोजन भी कड़वा लगने लगता है। खाने का मजा लेने के लिए संयम चाहिये। जठराग्नि प्रदीप्त हो और वह उतना ही अन्न अंगीकार करे जितना वह पचा सकती है, तभी अन्न, अन्न रहता है। अन्यथा वह अत्ता बन जाता है-स्वयं खाने वाले को ही खा जाता है। संसार में भोज्य पदार्थों की कमी नहीं है। कमी अत्ताओं की है-ऐसे अत्ताओं की जो संयम-पूर्वक खाएँ, आनन्द लेकर खाएँ। 'रयि'- रमणीय धन-धान्य तो यथेष्ठ मात्रा में विद्यमान है परन्तु उसे कोई रहने भी दे।

उपभोग को आनन्ददायक बनाने का एक और भी गुर है-बाँट कर खाना। अकेले खाने में वह मजा नहीं आता जो मिलकर खाने में। सह भोज भोजन को अधिक स्वादु बना देता है। जहाँ कष्ट मिल कर भोगने से आधा रह जाता है, वहाँ सुख बाँट कर भोगने से दूना हो जाता है।

इससे भी ऊँचा सुख, दूसरों को सुख देने में है। किसी भूखे की भूख मिटाने में जो आध्यात्मिक तृप्ति होती है, वह अपना पहिले से भरा हुआ पेट भरने में कहाँ है? अपने मुख का ग्रास दूसरे के मुख में डाल कर प्रसन्न होना- यह एक अलौकिक आह्लाद है। माता के जीवन में यह घटना प्रतिदिन घट रही है। पिता का पितृत्व इस अलौकिक आह्लाद का आनन्द लेने में ही है। जिनका जीवन यज्ञिय है, वे दूसरों का दु:ख दूर करने में ही अपने लिए सुख की सामग्री प्राप्त करते हैं। यज्ञाग्नि **'अत्रित्व'** का-पेटूपन का नाश कर देती है। स्वार्थी को अपने वश में कर उसके स्वार्थ को यथार्थ बना देती है। अब दूसरों का स्वार्थ उसका अपना स्वार्थ बन जाता है। उसका 'स्व' विशाल हो जाता है। वह 'अत्ता' न रहकर 'अन्न' बन जाता है। अब वह धन का दास नहीं, प्रत्युत स्वामी बन जाता है। वह धन के बिना भी रह सकता है, धन के साथ भी। और दोनों अवस्थाओं में वह इस अपनी स्थिति का उपभोग यज्ञार्थ करता है। यज्ञार्थ मरना भी जीना है और यज्ञार्थ जीने के तो कहने ही क्या हैं? यज्ञाग्नि का महत्व इसी में है कि धनाभाव को भी एक विशेष प्रकार का धन बना दे। जिसका जीवन यज्ञमय है वह रंक भी राजा है। 'रयि' आनन्द का नाम है और यदि किसी ऊँचे उद्देश्य के लिए रंक रहने में वह आनन्द मिल जाए जो अन्यथा राज-गद्दी पर बैठकर भी प्राप्त न होगा, तो रंक रहने में घाटे का सौदा ही क्या है?

'रयि' का 'रयित्व' यज्ञाग्नि में है। याग की आग इतनी प्रदीप्त हो जाय कि 'अत्रित्व' का-संकुचित स्वार्थ का नाम-निशान भी न रहे। उसके तीखे तेज से सभी सुकड़ाव, सभी हिच किचाहटें, सभी संकोच नष्ट हो जाएँ। विशाल विश्व हमारा 'स्व' हो। हम खायें विश्व के मुख से-जाज्वल्यमान अग्नि की विश्व-व्यापक ज्वालाओं से। अग्नि को देवताओं का मुख कहा गया है। यजमान होकर हमारा मुख ही देवताओं का मुख हो जाए। हम अग्नि हों अर्थात् दूसरों की क्षुधा की तृप्ति करने वाले। तब वास्तव में हमारा उपभोग 'रयि'-रत्न-सम रमणीय उप भोग-होगा। उसमें आनन्द की पराकाष्ठा होगी। अग्नि-देव खाता है हव्यदान के लिए। उसका उपभोग और हव्यदान पर्याय हैं।

यही भाव राष्ट्राग्नि का है। राष्ट्र की स्थापना स्वार्थी 'अत्रियों' के नियमन के लिए हुई है- उन्हें अग्नि-मुख प्रदान कर वास्तविक अत्ता बनाने के लिए। पृथिवी की कोख में 'रयि' बहुत है परन्तु वह किसी के काम नहीं आ रही। 'अत्रियों' को अजीर्ण है, न खाने वाले भूखे हैं। दोनों को यज्ञ का उपासक बनाओ। दोनों को 'रयि' प्राप्त हो जाए। रत्नगर्भा वसुन्धरा दोनों को रमणीय रत्न प्रदान करेगी। रत्न 'रत्न' हों, रयि 'रयि' हो। कोई रमण-कर्त्ता देव भी हो तो। देवताओं के रमण में-लीला में-यज्ञाग्नि चमके तब। तो क्या ऐसे रमणीय खिलाड़ी हमीं न हो जाएँ? यज्ञाग्नि को अपना मुख-उपभोग का उपकरण, इन्द्रिय-बना लें। बस! फिर तो हम देव हैं ही।

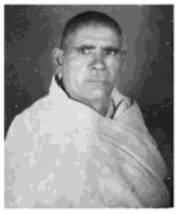

शांतिप्रवाह--- पुनर्प्रकाशन

सत्य के लिये बलिदान

❒स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्योपदेशक, संस्थापक शांतिधर्मी

सिरसा में पत्रकार रामचन्द्र छत्रपति की हत्या पर लिखित (जनवरी २००३ के अंक में प्रकाशित) यह सम्पादकीय धार्मिक समुदाय का गम्भीर आह्वान करता है।

रामचन्द्र छत्र पति का बलि दान सत्य के लिए हो गया। यह एक विडम्बना ही है कि सत्य बोलने वालों को बलिदान देना ही पड़ता है। इस अपराध के वास्तविक दोषियों को पकड़ा जाएगा या नहीं--उन्हें समुचित सजा मिलेगी या नहीं--यह तो कानून व सरकार के हाथ में है--लेकिन जनसामान्य के लिए एक अवसर है कि वह सत्य के लिए बलिदान करने वालों की दीर्घ परम्परा को याद करते हुए गंभीर चिन्तन करे और यह तय करे कि उसे क्या करना है।

डेरों, मठों, गुरुडम की दुकानों में आपराधिक कृत्यों के उदाहरण तो पहले भी आते रहे हैं, इसमें तो कोई शक नहीं है--परन्तु इतना होने पर भी इनमें आध्यात्मिक सच्चाई क्या है, जिसकी तलाश में हजारों श्रद्धालु इनकी शरण में जाते हैं। आज संसार में, खास कर भारतवर्ष में इतने गुरु हैं, इतने मत मतान्तर हैं कि आम आदमी का भ्रमित होना स्वाभाविक है। साथ ही जो जिस का अनुयायी बन जाता है, वह उसको छोड़कर अन्य सभी को झूठा-अपूर्ण -मानता है। ऋषि दयानन्द ने इसके बारे में नौ सौ निन्यानवे की गवाही का दृष्टान्त दिया है कि हजार सम्प्रदायियों में प्रत्येक को झूठा बताने वाले अन्य सभी नौ सौ निन्यानवे गवाह हैं। इस गुरुडम ने मानवता के वास्तविक धर्म को लगभग तिरोहित कर दिया है- ये देश के लोगों को बाँटने का कार्य भी कर रहे हैं। यह इसलिए हो रहा है क्योंकि देश में विद्या का प्रचार नहीं रहा। यही कारण है कि व्यक्तियों को महामण्डित करके उन्हें भगवान का स्थान देने का प्रयास किया जा रहा है। इस देश के धर्मभीरू लोगों में धर्म की दुकानदारी चलाना बड़ा आसान सा व्यवसाय है। आश्चर्य तो यह है कि ये सभी एक दूसरे को गलत बताते हैं और मंच पर बैठ कर कहते हैं कि हम किसी की बुराई नहीं करते।

बुराई क्या है? एक तो किसी का नाम लेकर उसके गुणों को दोष और दोषों को गुण बताना। दूसरी और असली बुराई तो यह है कि भोले-भाले लोगों को सही कल्याण के मार्ग से हटाकर भरमाना और भटकाना। अध्यात्म मानवमात्र के कल्याण का सर्वसुलभ मार्ग है, यह सबको प्राप्त है। इसकी साधना प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं करनी है। इसका उद्देश्य है आत्मा की उन्नति करना। किसी भी चीज की उन्नति का मतलब है, उसके स्वाभाविक गुणों को बढ़ाना और अस्वाभाविक गुणों यानि बुराईयों को दूर करना। गुरु का कार्य इस मामले में मार्गदर्शन करना है, वह मार्गदर्शन तभी कर सकता है, जब वह स्वयं विद्या का ज्ञाता हो। विद्या का मतलब है तर्क और प्रमाण पर खरी उतरने वाली विद्या। गुरु दु:खों से बचाता है तो इसका मतलब यही है कि वह उसके लिए मार्गदर्शन करता है। वह पूर्ण योगी, विद्वान धर्मात्मा होना चाहिए। -उसका मन वचन कर्म एक जैसा होना चाहिए। इतने पर भी उसकी भूमिका मार्गदर्शक की ही है-वह भगवान होने का दावा कभी नहीं करता- बल्कि किसी शिष्य को भी यह दावा नहीं करने देता। आज तक किसी भी सच्चे गुरु ने अपने शिष्यों को अपना नाम जपने को नहीं कहा। मंत्रदाता का भी यही अर्थ है कि रहस्यमय मार्ग बतलाने वाला। आज तक किसी विद्वान योगी ऋषि ने छुपकर कान में परमात्मा का नाम नहीं बताया, खुल्लम खुल्ला घोषणापूर्वक ही बतलाया। आज कल कान में मंत्र देने का संभवत: यही अभि प्राय: है कि कहीं इनकी दुकानदारी खराब न हो जाए। जो लोग गुरु द्वारा पाप लेने की बात करतें हैं, वे सरेआम योगिराज श्रीकृष्ण को झूठा बता रहे हैं- जो कहते हैं कि किया हुआ कर्म अवश्य भोगना पड़ेगा। लाखों रूपये लगाकर सजी हुई स्टेज पर बैठकर त्याग का उपदेश पिलाने वाले गुरुओं को पहचानना होगा। जो जीवन की क्षणभंगुरता का उपदेश देकर मौत से न डरने की शिक्षा देते हैं और स्वयं अत्याधुनिक हथियारों से लैस अंगरक्षकों से घिरे रहते हैं। जो जप तप, स्वाध्याय, शास्त्र को व्यर्थ बताते हैं कि कहीं लोगों में विद्या का प्रचार न हो जाए और उनकी विद्या की पोल न खुल जाए। जो स्वयं जानलेवा रोगों से ग्रस्त हैं और भक्तों के असाध्य रोगों को छूते ही दूर कर देते हैं।

सत्य के लिए बलिदान देने वाले -एक मौका और देते हैं- धर्म के नाम पर व्यापार करने वाले ठेकेदारों के चंगुल से बचकर अपने आप का उद्धार करने का। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में ही एक उपाय बताया है-सच्चाई जानने का कि इन हजार मतवादियों को इकट्ठे बैठाकर--(जो कि आज के युग में असम्भव सा कार्य है-) पूछा जाए कि बोलो सत्य बोलना धर्म है कि नहीं! न्याय धर्म है कि नहीं- चोरी, झूठ अधर्म है या धर्म? जिसको सब-धर्म कहते हों वही धर्म है, बाकि सबके अपने-अपने ट्रेडमार्क हैं- इसीलिए हम बार-बार कहते हैं कि धर्म अलग-अलग नहीं होता। आडम्बर अलग-अलग होते हैं।

इन आडम्बरों को पहचान कर छोड़ना होगा। पर इन सबके व्यक्तिगत स्वार्थ और राजसी वैभव यह मानवता की एकता स्थापित नहीं होने देंगे-इसलिए यह कार्य धार्मिक जनता को स्वयं करना होगा।

प्रेरणा-पथ

बड़ों की बड़ी सीख

हिसार दयानन्द ब्रह्म विद्यालय के प्रिंसिपल ज्ञानचंद भूतपूर्व प्रिंसिपल डीएवी कॉलेज लाहौर केरल में वैदिक धर्म का प्रचार करने गये। नरेंद्र नाम का एक माँसाहारी, धूम्रपान करने वाला, नास्तिक नौजवान उनसे ईश्वर की सत्ता पर बहस करने लगा। प्रिंसिपल जी दो दिन तक बहुत कम बोलते हुए नरेंद्र की बातों को धैर्य से सुनते रहे। तीसरे दिन नरेंद्र के पास जब कुछ भी बोलने को न रहा तब प्रिंसिपल जी ने दो घंटे तक वेद आधारित ईश्वरीय सत्ता पर अपने विचार प्रकट किये, जिन्हें सुनकर नरेंद्र जी निरुत्तर हो गये। इसके पश्चात् नरेंद्र जी ने सुदूर केरल से दयानंद ब्रह्म विद्यालय, हिसार में प्रवेश लेकर शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी, व्याकरण शिरोमणि पंडित युधिष्ठिर मीमांसक जी से 3 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण कर सिद्धांताचार्य की उपाधि ग्रहण की। फिर आपने केरल को केंद्र बनाकर प्रचार आरम्भ कर दिया। आचार्य नरेंद्रजी ने मलयालम में स्वामी दयानंद के समस्त ग्रन्थ, चतुर्वेद संहिता आदि कुल ८० पुस्तकें प्रकाशित कर केरल में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया। स्वर्गीय आचार्य नरेंद्र जी ने स्वयं मुझे बताया था कि प्रिंसिपल ज्ञान चंद की गम्भीर मुद्रा, अल्प भाषण और दूसरे को बोलने के लिए पर्याप्त समय देना, ऐसे गुण थे जिसके कारण मैं नास्तिक से आस्तिक ही नहीं अपितु वैदिकधर्मी भी बन गया।

अत्यंत उग्रता, तत्परता, जोश, धैर्य के न होने से आप अनेक बार सामने वाले के हृदय तक अपनी बात नहीं पहुंचा पाते।

इसे कहते हैं बड़ों से बड़ी सीख!

-डॉ० विवेक आर्य

बिन्दु बिन्दु विचार संकलन

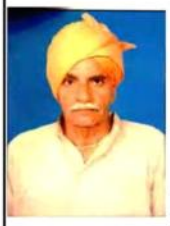

❐भलेराम आर्य, सांघी वाले 9416972879

❖पराया धन और पराई स्त्री इनको दूर से ही त्याग दें।

❖ब्राह्मण वही है जो सत्यवादी है।

❖स्त्री, बालक, वृद्ध और रोगी, ये चार प्रकार के मनुष्य दया के पात्र हैं।

❖जिन परिवारों में नारी जाति का सम्मान होता है और वे प्रसन्न रहती हैं, वहां उत्तम सन्तान जन्म लेती हैं जहाँ नारी दु:खी होकर अपनी आंखों से आंसू गिराती हैं, वहाँ विनाश के बादल मंडराने लगते हैं।

❖जिस परिवार या राष्ट्र में पशु सताये जाते हैं, वहां गरीबी आ जाती है।

❖अत्यन्त अभिमान, अधिक बोलना, त्याग का अभाव, क्रोध, अपना ही पेट पालने की चिन्ता और मित्र के साथ द्रोह (धोखा) करना- ये छ: तीखी तलवारें देहधारियों की आयु को घटाती हैं।

❖जो मनुष्य अपने साथ जैसा बर्ताव करे उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिए, यही नीति है। कपट का आचरण करने वालों के साथ कपटपूर्ण और अच्छा बर्ताव करने वालों के साथ साधु भाव से बर्ताव करना चाहिए।

❖विद्वान्, गौ, कुटुम्बी, बालक, स्त्री, अन्नदाता और शरणागत ये अवध्य होते हैं, इन्हें नहीं मारना चाहिए।

❖जिन्हें अपने हित की बात भी अच्छी नहीं लगती, ऐसे मनुष्यों को योग-क्षेम की सिद्धि नहीं हो पाती।

साधु

भगवान महावीर एक गाँव से गुजर रहे थे। एक जिज्ञासु प्रकृति के किसान ने प्रश्न किया- महाराज! साधु और असाधु में क्या फर्क है? साधु कौन? असाधु कौन है? क्या हमारे जैसे साधारण गृहस्थ भी साधु की संज्ञा पा सकते हैं?

भगवान महावीर ने जवाब दिया- जिसने स्वयं को साध लिया वास्तविक साधु वही है। असाधु तो वह है जो केश और वेश से साधु बनने का प्रपंच रचता है। यदि तुमने अपने आप को साध और सुधार लिया तो निश्चय ही तुम गृहस्थ होते हुए भी साधु हो।

जिज्ञासु किसान उत्तर से संतुष्ट हो गया।

-श्यामसुन्दर 'सुमन', भीलवाड़ा

सम्मान

प्रसिद्ध साहित्यकार काका कालेलकर उन दिनों जापान-यात्रा पर थे। रास्ते में उन्होंने फुटपाथ पर पुरानी किताबें बेचने वाले लड़के को देखा। उन्हें एक किताब पसंद आई। वह सस्ते मूल्य की थी सो खरीद ली। इसके बाद लड़के ने पूछा-'आप तो कोई विदेशी मालूम पड़ते हैं। शायद भारतीय हैं। किताब वापस कीजिए। मैं इतने ही पैसों में दुकानदार से नई किताब लाकर आपके होटल में पहुंचा दूंगा।'

काका ने आश्चर्य से पूछा- 'तुम लाभ क्यों छोड़ते हो और इतनी दौड़धूप का क्या कारण है?'

लड़के ने सहज उत्तर दिया- 'मैं नहीं चाहता कि जापानियों के अतिथि-सम्मान पर कोई संदेह करे। सद्व्यवहार के अभाव में जापान की विदेशों में बदनामी जो होगी।'

-दीपक कुमार दीक्षित

आदर्श

लोकाराधक मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम

❒श्री अशोक कौशिक

हमने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के साथ-साथ आदर्श भी माना है किन्तु आज उस आदर्श के अनुकरण में प्रमाद और शिथिलता दिखाई दे रही है, यही हमारे अधःपतन का कारण है।

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम आदर्श नृपति की भाँति केवल प्रजा का पालन ही नहीं करते थे अपितु प्रजा के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिये तत्पर रहते थे। वे पक्षपात करना नहीं जानते थे। उनके सम्बन्ध में प्रसिद्ध था- **पौरान् स्वजनवन्नित्यं कुशलं परिपृच्छति।** अपने स्वजनों की भाँति वे नगरवासियों से भी प्रतिदिन उनका कुशल पूछा करते थे। यही कारण था कि समस्त पुरवासी प्रतिदिन दोनों समय श्रीराम के कल्याण की कामना करते थे।

जब राक्षसों से अपनी सुरक्षा के लिए विश्वामित्र राजा दशरथ के पास आये तो मुख से सहसा निकल गया 'मैं युद्ध में दुष्ट रावण के सम्मुख नहीं ठहर सकता। यहाँ तक कि मैं उसकी सेना से भी युद्ध नहीं कर सकता।' किन्तु विश्वामित्र तो दशरथ नहीं अपितु राम और लक्ष्मण को लेने के लिए आये थे। यह सुनकर तो दशरथ मोहाच्छन्न हो गया। जब महर्षि ने उन्हें समझाया और विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जा सके। अपने आश्रम में पहुँचकर विश्वामित्र ने दोनों भाईयों को राक्षसों द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों से परिचित कराते हुए उनके हृदय में ऐसे दिव्य भाव भी भर दिये थे जो आजीवन स्थिर रहे।

कैकेयी राम के लिए जब वनवास माँगती है तो कहती है- 'नवपंच च वर्षाणि दण्डकारण्यमाश्रितः' राम चौदह वर्ष तक दण्डकारण्य में निवास करें। इस प्रकार राम दक्षिणापथ की ओर अग्रसर किये गए। किशोरावस्था में विश्वामित्र ने राम के भीतर जो भाव भरे थे उनके ही आधार पर राम ने बाली से कहा था **'इक्ष्वाकूणां ह्ययं भूमिः सशैलवनकानना।'** उस समय राम के मन में एक ही चिन्ता थी कि किसी प्रकार सम्पूर्ण भूमण्डल को एक बार पुनः आर्यावर्त की पताका के नीचे लाना है।

जब-जब लक्ष्मण माता कैकेयी के प्रति क्रुद्ध होते तब-तब राम कहते- **'न तेऽम्बा मध्यमा तात गर्हितव्या कदाचन।'** तुमको मझली माता की निन्दा नहीं करनी चाहिये। राम की धीरता के विषय में महर्षि वाल्मीकि ने लिखा-

आहुतस्याभिषेकार्थं वनाय प्रस्थितस्य च।
न लक्षितो मुख तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः।।

राज्याभिषेक की सुखद आज्ञा से न तो उनके मुख पर प्रसन्नता के चिह्न दिखाई दिये और राज्य के बदले वनवास की आज्ञा मिलने पर न ही उनके मुख पर विषाद के चिह्न दिखाई दिये।

रावण के मरने पर विभीषण रावण की अन्त्येष्टि को भी उद्यत नहीं था। उस समय राम ने विभीषण को जो उपदेश दिया वह राम जैसा मर्यादित पुरुष ही दे सकता था। राम ने कहा 'विभीषण! वैर मरण तक हुआ करता है। 'मरणान्तानि वैराणि' हमारा प्रयोजन सिद्ध हो चुका। अब तुम इसकी राजोचित अन्त्येष्टि करो, यही तुम्हारा कर्तव्य है।

राम के मन में गुणों की प्रतिष्ठा थी और वे चाहते थे कि मनुष्य जाति की भलाई के लिए उस विद्या का संचय किया जाए जो रावण के पास थी। इसलिए राम ने अपने भाई लक्ष्मण को मरणासन्न रावण के पास विनयपूर्वक उस विद्या के अर्जन के लिए भेजा और लक्ष्मण ने रावण के पैंताने खड़े होकर रावण से वह विद्या अर्जित की।

मित्र के प्रति राम बड़े संवेदनशील थे। जब सुग्रीव लंका युद्ध के समय राम को सूचित किये बिना रावण के शिविर में जाकर उसको जली-कटी सुना कर लौट आया तो राम ने उससे कहा-'ऐसा दुस्साहस करना राजा को शोभा नहीं देता। यदि तुम्हें कुछ हो जाता तो!' एक और समय पर जब लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े थे, राम के मन में इससे बड़ी खिन्नता हो रही थी। उस समय जहाँ उन्हें अन्य अनेक कार्यों के अधूरा रह जाने का क्षोभ था वहाँ उनको यह दुःख था- **'यन्मया न कृतो राजा लंकायाः विभीषणः।'** मैं विभीषण को लंका का राजा न बना सका।

बालि ने मरते समय राम से अपने पुत्र अंगद के संरक्षण की प्रार्थना की। राम ने उसको कहा कि वे उससे पुत्रवत् स्नेह करेंगे। इस वचन का उन्होंने आजीवन पालन किया। 'हनुमन्नाटक' में लिखा है कि लंका विजय के बाद जब विजयोत्सव मनाया जा रहा था तो उस समय अंगद ने कहा-'बन्द करो यह सब। यह विजय अधूरी है। जिसे आप अपनी सफलता समझ रहे हैं, वह सफलता मेरी है। मेरे पिता के दो शत्रु थे- एक रावण और दूसरे आप। मेरा कर्त्तव्य है कि मैं अपने पिता की भावना का सम्मान करुँ। अतः आपको पूर्ण सहयोग देकर अपने पिता के एक शत्रु

रावण को मैंने समाप्त कर दिया है, किन्तु जब तक मैं आपको नहीं पराजित कर लेता तब तक पितृ-ऋण से उऋण नहीं हो सकता। अतः आपका और मेरा युद्ध होगा, उसके बाद जो विजयी होगा वही विजयोत्सव मनाने का अधिकारी होगा। उस समय राम ने न तो अंगद को ललकारा और न फटकारा। उन्होंने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, 'मैं इसे तुम्हारी विजय मानता हूँ। मैंने तुम्हारे पिता को तुम्हें पुत्रवत् मानने का वचन दिया था, इस प्रकार तुम मेरे पुत्र हो और शास्त्रों का वचन है- **सर्वस्माज्जयमिच्छेत् पुत्रादिच्छेत् पराजयम्।**' अन्यों से भले ही विजय की कामना करो किन्तु पुत्र से अपनी पराजय की कामना करो। यह भी मर्यादा पालन का अनन्य उदाहरण है। ऐसे पिता पर कौन प्रजारूपी पुत्र अपने प्राण न्यौछावर नहीं करेगा?

राम के सभी रूप मर्यादित और लोकरंजनकारी हैं। आर्दशपुत्र के रुप में वे कौशल्या के आनन्दवर्द्धक और दशरथ के आज्ञापालक हैं। बालक के रुप में अनुजों और सखाओं तथा पुरवासियों के परमप्रिय हैं। किशोर रुप में

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

आदर्श

बाल्मीकि की दृष्टि में राम

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान्धृतिमान्वशी।।
बुद्धिमान्नीतिमान्वाग्मी श्रीमान् शत्रुनिबर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनु।।
महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिन्दमः।
आजानबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः।।
समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान्।
पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवान् शुभलक्षणः।।
धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान्।।
प्रजापतिसमः श्रीमान्धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता।।
रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः।।
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान्प्रतिभान्वान्।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः।।
सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः।
आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः।।
स च सर्वगुणोपेतः कौसल्यानन्दवर्धनः।
समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव।।
विष्णुना सदृशो वीर्ये सोमवत्प्रियदर्शनः।
कालाग्निः सदृशः क्रोधे क्षमया पृथिवीसमः।।
धनदेन समस्त्यागे सत्ये धर्म इवापरः।।

श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे
बालकाण्डे प्रथमोः सर्गे श्लोक 8-18)

इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न, राम नाम से विख्यात, श्रीरामचन्द्र नियतस्वभाव, अतिबलवान्, तेजस्वी, धैर्यवान् और जितेन्द्रिय हैं। वे बुद्धिमान्, नीतिज्ञ, मधुरभाषी, श्रीमान्, शत्रुनाशक, विशाल कन्धों वाले, गोल तथा मोटी भुजाओं वाले, शंख के समान गर्दन वाले, बड़ी ठोड़ी वाले और बड़े भारी धनुष को धारण करने वाले हैं, उनके गर्दन की हड्डियाँ मांस से छिपी हुई हैं। वे शत्रु का दमन करने वाले हैं। उनकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हैं अर्थात् वे आजानबाहु हैं। उनका शिर सुन्दर एवं सुडौल है, ललाट चौड़ा है। वे अच्छे विक्रमशाली हैं। उन के अङ्गों का विन्यास सम है। उनके शरीर का रंग स्निग्ध और सुन्दर है। वे प्रतापी हैं। उनकी छाती उभरी हुई है और नेत्र विशाल हैं। उनके सर्व अङ्ग-प्रत्यङ्ग सुन्दर हैं और वे शुभ लक्षणों से सम्पन्न हैं। वे धर्मज्ञ, सत्यप्रतिज्ञ, परोपकारी, कीर्तियुक्त, ज्ञाननिष्ठ, पवित्र, जितेन्द्रिय और समाधि लगाने वाले (योगी) हैं। वे प्रजापति ब्रह्मा के समान प्रजा के रक्षक, अतिशोभावान् और सर्व के पोषक हैं। वे शत्रुनाशक और प्राणिमात्र के रक्षक तथा धर्मप्रवर्तक हैं। वे अपने प्रजा-पालन रुप धर्म के रक्षक, स्वजनों के पालक, वेद-वेदाङ्गों के मर्मज्ञ तथा धनुर्वेद में निष्णात हैं। वे सर्व शास्त्रों के तत्त्वों को भली-भाँति जानने वाले, उत्तम स्मरणशक्ति से युक्त, प्रतिभाशाली सूझ बूझ वाले, सर्वप्रिय, सज्जन, कभी दीनता न दिखाने वाले और लौकिक-अलौकिक क्रियाओं में कुशल हैं। जिस प्रकार नदियाँ समुद्र में पहुँचती हैं उसी प्रकार उनके पास सदा सज्जनों का समागम लगा रहता है। वे आर्य हैं, समदृष्टि और प्रियदर्शन् हैं। वे सर्व गुणालंकृत और कौसल्या का आनन्द और यश बढ़ाने वाले हैं। वे गम्भीरता में समुद्र के समान, धैर्य में हिमालय के तुल्य, पराक्रम में विष्णु सदृश, प्रियदर्शन चन्द्रमा जैसे, क्षमा में पृथिवी की भाँति व क्रोध में कालाग्नि के समान हैं। वे दानी और सत्यभाषण में मानो धर्म के ही स्वरुप हैं।

राष्ट्र-चिन्तन

क्या भगतसिंह नास्तिक थे?

❒राजेशार्य आट्टा, ग्राम आट्टा जिला पानीपत (9991291318)

'क्रांतिकारी भगतसिंह' में एडवोकेट प्राणनाथ के सन्दर्भ से लिखा है- फिर मैंने (भगतसिंह से) पूछा- 'आपकी अंतिम इच्छा क्या है ?' उनका उत्तर था 'बस यही कि फिर जन्म लूं और मातृभूमि की और अधिक सेवा करूं।'

प्रिय पाठकवृन्द! वर्तमान में वैज्ञानिक सुख-सुविधाओं का उपभोग करता हुआ मानव उनके आविष्कारक वैज्ञानिकों का गुणगान करता हुआ यह भूल जाता है कि उनमें से बहुत से वैज्ञानिक नास्तिक थे अर्थात् संसार को प्रकाश व सुविधा देने के कारण ही उसका सम्मान किया जाता है, नास्तिक होने के कारण नहीं। अपने प्राणों की आहुति देकर हमें स्वतंत्र कराने वाले वीरों के विषय में भी यही बात है अर्थात् पं० रामप्रसाद बिस्मिल इसलिए आदरणीय नहीं है कि वे सच्चे आस्तिक थे और वीर भगतसिंह इसलिए आदरणीय नहीं है कि वे कट्टर नास्तिक थे। देश की जनता में आज भी उनके लिए जो प्यार और सम्मान है, उसका कारण उनका राष्ट्र-प्रेम व बलिदान है, पर कुछ दशकों से मार्क्सवादी विचारधारा के लोग इस बात से परेशान हैं कि भगतसिंह को वीर क्रान्तिकारी ही क्यों माना जाता है, नास्तिक, लेनिनवादी व मार्क्सवादी क्यों नहीं! ये लोग इस बात को छिपाने का प्रयास करते हैं कि भगतसिंह की पृष्ठभूमि आर्यसमाजी व क्रांतिकारी थी। केवल लेनिन व मार्क्स के साहित्य से ही वे क्रांतिकारी नहीं बने थे। निर्वासित हुए चाचा अजीतसिंह के वियोग में बरसते चाची हरनाम कौर के आंसू नन्हें भगत को अंग्रेजों से लड़ने के लिए प्रेरित कर रहे थे। पिता किशनसिंह की अंग्रेजों से होने वाली टक्कर को वे प्रतिदिन देखते थे। जलियांवाला बाग के हत्याकांड से वे परिचित थे। शहीद करतार सिंह सराभा को वे अपना आदर्श मानते थे। कूका आंदोलन के प्रवर्तक गुरु रामसिंह, सूफी अम्बाप्रसाद, मदनलाल ढींगरा, बलवन्त सिंह जैसे बलिदानी वीर उनमें क्रांतिभाव जगाते थे और सबसे मुख्य बात तो यह है कि उन्हें इस बात का स्मरण रहता था कि उनके दादा सरदार अर्जुनसिंह ने यज्ञोपवीत के समय घोषणा की थी कि उन्हें (भगतसिंह को) खिदमते वतन के लिए वक्फ कर दिया है।

भगतसिंह को मार्क्सवादी व नास्तिक प्रचारित करते समय ये लोग अन्य किसी भी आस्तिक देशभक्त की चर्चा नहीं करते और सम्मान नहीं देते, फिर वह चाहे नेताजी सुभाषचन्द्र हो या भगतसिंह के अन्तरंग साथी चन्द्रशेखर आजाद हों। जबकि भगतसिंह ने किसी भी बलिदानी वीर की इसलिए उपेक्षा नहीं की कि वह मार्क्सवादी नहीं था और आस्तिक था। काकोरी के शहीदों के विषय में भगतसिंह ने 'किरती' जनवरी १९२८ में 'विद्रोही' के नाम से लिखा-

'वे चारों वीर (रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला, रोशनसिंह व राजिन्द्र लाहिड़ी) आस्तिक देशभक्त थे। भगतसिंह ने लिखा- 'नीचे हम उन चारों के हालात संक्षेप में लिखते हैं, जिससे यह पता चले कि यह अमूल्य रत्न मौत के सामने खड़े होते भी किस बहादुरी से हँस रहे थे। श्री राजेन्द्र लाहिड़ी- आपका स्वभाव बड़ा हँसमुख और निर्भय था। आप मौत का मजाक उड़ाते रहते थे।

श्री रोशनसिंह जी- (फाँसी के) तख्ते पर खड़े होने के बाद आपके मुख से आवाज निकली, वह थी- वन्दे मातरम्।

श्री अशफाक उल्ला- आप श्री रामप्रसाद का दायां हाथ थे, मुसलमान होने के बावजूद आपका कट्टर आर्यसमाजी से हद दर्जे का प्रेम था। दोनों प्रेमी एक बड़े काम के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर अमर हो गए।

श्री रामप्रसाद बिस्मिल- फाँसी से दो दिन पहले सी० आई० डी० के मि० हैमिल्टन आप लोगों से मिन्नतें करते रहे कि आप मौखिक रूप से सब बता दो, आपको पांच हजार रुपया नकद दिया जाएगा और सरकारी खर्चे पर विलायत भेजकर बैरिस्टर की पढ़ाई करवाई जाएगी। लेकिन आप कब इन बातों की परवाह करते थे। आप हुकूमतों को ठुकराने वाले व कभी कभार जन्म लेने वाले वीरों में से थे।'

मदनलाल ढींगरा परम आस्तिक देशभक्त थे, उनकी शहादत को नमन करते हुए भगतसिंह ने लिखा- 'धन्य था वह वीर! धन्य है उनकी याद! मुर्दा देश के अमूल्य हीरे को बारम्बार नमस्कार!' (किरती, मार्च १९२८)

श्री बलवन्त सिंह के विषय में लिखा है- 'वे बड़े ईश्वरभक्त थे।' ('चांद' फाँसी अंक नवम्बर १९२८)

१९२४ में लिखे व २८ फरवरी १९३३ के 'हिन्दी सन्देश' में प्रकाशित 'पंजाबी की भाषा' लेख में भगतसिंह लिखते हैं- 'दोनों (स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ) विदेशों में भारतीय तत्त्वज्ञान की धाक जमाकर स्वयं भी जगत् प्रसिद्ध हो गए, जहाँ स्वामी विवेकानन्द कर्मयोग का प्रचार कर रहे थे, वहाँ स्वामी रामतीर्थ भी गाया करते थे-

हम रूखे टुकड़े खायेंगे, भारत पर वारे जाएंगे।
हम सूखे चने चबाएंगे, भारत की बात बनाएंगे।
हम नंगे उमर बिताएंगे, भारत पर जान मिटाएंगे।
इतना महान देश तथा ईश्वर-भक्त हमारे प्रान्त में पैदा हुआ हो, परन्तु उसका स्मारक तक न दीख पड़े, इसका कारण साहित्यिक फिसड्डीपन के अतिरिक्त क्या हो सकता है?'

१५ नवम्बर व २२ नवम्बर १९२४ के 'मतवाला' में बलवन्तसिंह के नाम से भगतसिंह 'विश्व प्रेम' में लिखते हैं-'वसुधैव कुटुम्बकम्! जिस कवि सम्राट् की यह अमूल्य कल्पना है, जिस विश्व प्रेम के अनुभवी का यह हृदयोद्गार है, उसकी महत्ता का वर्णन करना मनुष्य शक्ति से सर्वथा बाहर है। जिस दिन तुम सच्चे प्रचारक बनोगे इस अद्वितीय सिद्धान्त के, उस दिन तुम्हें माँ के सच्चे सुपुत्र गुरु गोविन्द सिंह की तरह कर्मक्षेत्र में उतरना पड़ेगा। राणा प्रताप की तरह आयुपर्यन्त ठोकरें खानी होंगी, तब कहीं उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकोगे। विश्वप्रेमी वह वीर है जिसे भीषण विप्लववादी, कट्टर अराजकतावादी कहने में हम लोग तनिक भी लज्जा नहीं समझते- **वही वीर सावरकर।** विश्वप्रेम की देवी का उपासक था 'गीता रहस्य' का लेखक **पूज्य लोकमान्य तिलक।** अरे ! रावण और बाली को मार गिराने वाले रामचन्द्र ने अपने विश्व प्रेम का परिचय दिया था भीलनी के झूठे बेरों को खाकर। चचेरे भाईयों में घोर युद्ध करवा देने वाले, संसार से अन्याय को सर्वथा उठा देने वाले कृष्ण ने परिचय दिया अपने विश्व प्रेम का- सुदामा के कच्चे चावलों को फांक जाने में।'

६ जून १९२९ को दिल्ली के सेशन जज की अदालत में दिये अपने बयान में भगतसिंह ने कहा था- 'इधर देश में जो नया आन्दोलन तेजी के साथ उठ रहा है, और जिसकी पूर्व सूचना हम दे चुके हैं- वह गुरु गोविन्द सिंह, शिवाजी, कमालपाशा, रिजाखां, वाशिंगटन, गैरीबाल्डी, लाफापेट और लेनिन के आदर्शों से ही प्रस्फुरित है और उन्हीं के पदचिह्नों पर चल रहा है।'

नौजवान भारत सभा, लाहौर का घोषणापत्र ११ से १३ अप्रैल १९२८ को तैयार किया गया, जिसमें लिखा था- 'गुरु गोविन्द सिंह को आजीवन जिन नारकीय परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था, हो सकता है उससे भी अधिक नारकीय परिस्थितियों का सामना करना पड़े।'

असेम्बली हाल में बम फैंकने के बाद दिल्ली जेल से २६ अप्रैल १९२९ को अपने पिता के नाम पत्र लिखकर भगतसिंह ने कुछ पुस्तकें मँगवाई, जिनमें तिलक जी की 'गीता रहस्य' भी थी। गुरु रामसिंह के विषय में तो यहाँ तक लिखा है- 'गुरु रामसिंह बड़े तेजस्वी तथा प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनके असाधारण आत्मबल सम्बन्धी बहुत सी बातें प्रसिद्ध हैं। कहते हैं कि वे जिसके कान में दीक्षा मन्त्र फूंक देते थे वही उनका परम भक्त और शिष्य हो जाता था। ऐसी अनेक घटनाएं हैं। जो भी हो, इतना तो मानना ही पड़ेगा कि गुरुजी ईश्वर भक्ति तथा उच्च चरित्र के कारण एक महान शक्तिशाली महापुरुष थे। अत: उक्त घटनाएं असम्भव नहीं।'

चिन्तनशील होने के कारण मानव के विचारों में परिवर्तन होता ही रहता है। यह परिवर्तन कभी किसी घटना विशेष के कारण हो सकता है, किसी व्यक्ति या साहित्य के संग से भी हो सकता है। शिकारी लक्ष्मणदास हिरणी के गर्भस्थ शिशुओं को मरते देखकर शिकार त्यागकर वैरागी माधोदास बन जाता है और फिर वही माधोदास गुरु गोविन्द सिंह की प्रेरणा से बंदा बैरागी बन हिन्दुओं की रक्षार्थ शस्त्र धारण कर इतिहास रचता है। मूर्तिपूजक पिता का बेटा मूलशंकर शिवरात की घटना से मूर्तिपूजा विरोधी हो जाता है। विज्ञान का विद्यार्थी नास्तिक गुरुदत्त महर्षि दयानन्द की अन्तिम लीला दर्शन कर दृढ़ आस्तिक बन जाता है। दुर्व्यसनों में फंसा नास्तिक मुंशीराम महर्षि दयानन्द के संग व सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से दृढ़ आस्तिक बन वकालत को ठोकर मार गुरुकुल कांगड़ी का आचार्य बन जाता है। जीवनभर God is nowhere कहकर नास्तिकता का प्रचार करने वाला इंग्लैण्ड का विचारक ब्रेडला मृत्युशय्या पर God is how here कह उठता है। फिर यदि आस्तिकता का चोगा पहनकर दीन-गरीबों का शोषण करने वाले लोगों को देखकर व लेनिन, मार्क्स आदि नास्तिक क्रांतिकारियों का साहित्य पढ़कर भगतसिंह उनकी विचारधारा से प्रभावित हो गये हों, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि उन क्रांतिकारियों का मुख्य विषय देश की शोषित, पीड़ित जनता का उद्धार करना था, ईश्वर-उपासना नहीं। और भगतसिंह का भी यही उद्देश्य था। अत: धर्म के नाम पर होने वाले भेदभाव छुआछूत, सांप्रदायिक दंगे आदि का कारण ईश्वर और धर्म को मानकर इन्हें परे हटाने का मार्क्स आदि की तरह भगतसिंह का भी विचार बना। 'किरती' मई १९२८ में 'धर्म और हमारा स्वतंत्रता संग्राम' में वे लिखते हैं- 'रूसी महात्मा टालस्टॉय ने अपनी पुस्तक Essay and Letter में धर्म पर बहस करते हुए इसके तीन हिस्से किए हैं-

१- Essentials of Religion, यानी धर्म की जरूरी बातें अर्थात् सच बोलना, चोरी न करना, गरीबों की सहायता करना, प्यार से रहना, वगैरा।

२- Philosophy of Religion, यानी जन्म-मृत्यु, पुनर्जन्म, संसार रचना आदि का दर्शन।

३- Rituals of Religion, यानी रस्मों-रिवाज वगैरा।

सो यदि धर्म पीछे लिखी तीसरी और दूसरी बात के साथ अन्धविश्वास को मिलाने का नाम है, तो धर्म की कोई जरूरत नहीं। इसे आज ही उड़ा देना चाहिये। यदि पहली और दूसरी बात में स्वतंत्र विचार मिलाकर धर्म बनता हो, तो धर्म मुबारक है। हमारी आजादी का अर्थ केवल अंग्रेजी चंगुल से छुटकारा पाने का नाम नहीं, वह पूर्ण स्वतंत्रता का नाम है - जब लोग परस्पर घुल-मिलकर रहेंगे और दिमागी गुलामी से भी आजाद हो जाएंगे।'

जिस गम्भीरता से भगतसिंह ने नास्तिकवाद को पढ़ा यदि उसी गम्भीरता से वैदिक आध्यात्मिक ग्रन्थों को भी पढ़ा होता या किसी वैदिक विद्वान् से शंका-समाधान किया होता, तो वे मार्क्सवाद की जगह वैदिक समाजवाद का प्रचार करते, क्योंकि नास्तिकवाद के पक्ष में उनके प्रश्न इतने मजबूत नहीं हैं। यद्यपि 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' शीर्षक में भगतसिंह ने लिखा है- 'मैंने अराजकतावादी नेता बाकुनिन को पढ़ा, कुछ साम्यवाद के पिता मार्क्स को, किन्तु ज्यादातर लेनिन, त्रात्स्की व अन्य लोगों को पढ़ा जो अपने देश में सफलतापूर्वक क्रांति लाए थे। वे सभी नास्तिक थे। १९२६ के अन्त तक मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि सर्वशक्तिमान परमात्मा की बात कोरी बकवास है।' तथापि १९२७ में अमरचन्द के नाम पत्र के अंत में वे लिखते हैं-

'अभी तक कोई मुकदमा मेरे खिलाफ तैयार नहीं हो सका और **ईश्वर ने चाहा** तो हो भी नहीं सकेगा। आज एक बरस होने को आया, मगर जमानत वापस नहीं ली गई। जिस तरह **ईश्वर को मंजूर होगा।**'

मई १९२७ में भगतसिंह ने 'विद्रोही' नाम से 'किरती' (पंजाबी पत्रिका) में 'काकोरी के वीरों से परिचय' लेख में अश्फाकउल्ला, रोशनसिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी, रामप्रसाद बिस्मिल, मन्मथनाथ गुप्त, जोगेशचन्द्र चटर्जी आदि का परिचय देकर अन्त में लिखा- '**ईश्वर उन्हें बल व शक्ति दे** कि वे वीरता से अपने (भूख हड़ताल के) दिन पूरे करें और उन वीरों के बलिदान रंग लाएं।'

फरवरी १९२८ में 'महारथी' में बी० एस० सिन्धू नाम से भगतसिंह ने 'कूका विद्रोह-।' लेख के अंत में लिखा है- 'उन अज्ञात लोगों के बलिदानों का क्या परिणाम हुआ, सो **वही सर्वज्ञ भगवान जाने**। परन्तु हम तो उनकी सफलता- विफलता का विचार छोड़ उनके निष्काम बलिदान की याद में एक बार नमस्कार करते हैं।'

नवम्बर १९२८ 'चांद' (फांसी अंक) में देशभक्त वीर सूफी अम्बाप्रसाद के विषय में लिखकर भगतसिंह ने अंत में लिखा है- 'आज सूफी जी इस देश में नहीं हैं। पर ऐसे देशभक्त का स्मरण ही स्फूर्तिदायक होता है। **भगवान उनकी आत्मा को चिर शांति दे।**'

जून १९२८ 'किरती' में 'सांप्रदायिक दंगे और उनका इलाज' लेख में लिखा है- 'बस किसी व्यक्ति का सिख या हिन्दू होना मुसलमानों द्वारा मारे जाने के लिए काफी था और इसी तरह किसी व्यक्ति का मुसलमान होना ही उसकी जान लेने के लिए पर्याप्त तर्क था। जब स्थिति ऐसी हो तो **हिन्दुस्तान का ईश्वर ही मालिक है।**'

'मैं नास्तिक क्यों हूँ' लेख में भगतसिंह ने यह भी स्वीकार किया है कि 'विश्वास' कष्टों को हल्का कर देता है, यहाँ तक कि उन्हें सुखकर बना सकता है। ईश्वर से मनुष्य को अत्यधिक सांत्वना देने वाला एक आधार मिल सकता है। 'उसके' बिना मनुष्य को स्वयं अपने ऊपर निर्भर होना पड़ता है। तूफान और झंझावात के बीच अपने पांवों पर खड़ा रहना कोई बच्चों का खेल नहीं है।'(५-६ अक्तूबर १९३०)

प्रिय पाठकवृन्द ! उक्त सभी प्रमाण श्री चमनलाल द्वारा सम्पादित 'भगतसिंह के संपूर्ण दस्तावेज' से लिये हैं। सम्पादक का उद्देश्य भगतसिंह की नास्तिकता व समाजवाद का प्रचार करना है। यह ठीक है कि भगतसिंह नास्तिक व समाजवाद के समर्थक थे और किसान-मजदूरों की शोषण-मुक्ति की बात करते थे, लेकिन उनके इस विचार के पीछे की प्रेरक-शक्ति के पीछे उनका स्वदेश प्रेम ही था। वे भारत राष्ट्र के किसी वर्ग को शोषित-वंचित नहीं देख सकते थे। उनका वामपंथ अपने मिजाज, प्रेरणा, चरित्र और चिंतन में भारत से जोड़ने वाला था, आजकल के वामपंथी ढर्रे की तरह भारत के अतीत, संस्कृति व सभ्यता से घृणा करने वाला नहीं।

भगतसिंह के लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' को आधार बनाकर उन्हें पूर्ण रूप से आंका नहीं जा सकता। यह लेख १९७९ में श्री विपिन चन्द्र प्रकाश में लाए। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भगतसिंह ने यह लेख तब लिखा था, जब फांसी का फंदा सामने था, जब चारों ओर अंग्रेजी सरकार का अत्याचार चल रहा था; गरीब, मजदूर और किसान अपमानित और शोषित हो रहे थे, आशा की किरण कम दिखाई दे रही थी। अगर भगवान के प्रति आस्था और प्यार स्वाभाविक है तो भगवान के प्रति नाराजगी भी उतनी ही स्वाभाविक है। गौ आदि पशुओं पर होने वाले अत्याचार को देखकर वेदों के परम विद्वान्, ईश्वर के सच्चे भक्त महर्षि दयानन्द का हृदय कांप उठा और ईश्वर को उलाहना देते हुए कहते हैं- 'हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर, जो

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

महिला दिवस

नारी का पुरोहित कर्म : अधिकार भी व्यवहार भी

❒डॉ० इन्दु गुप्ता 348, सैक्टर 14 फरीदाबाद

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और परम्परा प्राचीन होने के साथ-साथ अत्यन्त समृद्ध भी है। प्राचीनकाल में पुरुष के साथ नारियों को भी विद्या एवं ज्ञानार्जन के साथ-साथ पूजा-अर्चना, तपस्या-आराधना का समान अधिकार था तथा बालकों के साथ बालिकाओं का भी उपनयन संस्कार किया जाता था। वैदिक काल में पुरुष-नारी दोनों को ही विद्यार्जन, यज्ञ कर्मकाण्ड तथा वेद-पठन करने का समान अधिकार प्राप्त था। प्राचीनकाल में सावित्री, शैव्या, पनोबा, सुलभा, देवयानी, अपाला, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, विदुला, सत्तरूपा, वृन्दा, भद्रा, उशिता, गार्गी, रोहिणी, शावती, गौतमी, द्रौपदी, मदालसा, अनुसूया, कुन्ती दमयन्ती, तारा तथा वैदेही जैसी वेद-ज्ञाता एवं विदुषियों ने नारी जाति के सम्मान एवं गौरव को बढ़ाया। विद्योत्तमा सरीखी वेद-विद्या में अति पारंगत अपने शास्त्रार्थ के बल पर बड़े-बड़े प्रकाण्ड पण्डितों को हराकर उनकी ईर्ष्या का भाजन बनने वाली सन्नारी के नाम से भी इतिहास अनभिज्ञ नहीं।

कालान्तर में शनैः-शनैः पुरुष द्वारा अपने अहं के पोषण हेतु नारियों की विद्वता को नकारते हुए तथा उन्हें तुच्छ सिद्ध करने की मंशा से उन्हें समानाधिकार से वंचित कर दिया गया। वर्तमान में आधुनिक काल में नारी उत्थान व प्रगति के दावे करने वाले युग की भी घोर विडम्बना रही है कि महादेवी वर्मा जैसी प्रख्यात साहित्यकार एवं विदुषी को इलाहाबाद जैसी नगरी में कोई वेद पढ़ाने को तैयार नहीं हुआ था क्योंकि महादेवी एक स्त्री थीं और हमारे कर्मकाण्डी वेदपाठियों तथा महापंडितों के मतानुसार स्त्रियां वेद-पठन की अधिकारी नहीं थीं। २२ अगस्त, १९४६ को महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय की अध्यक्षता में गठित एक समिति द्वारा शास्त्रों के गम्भीर विश्लेषण तथा पुरातन पारम्परिक ग्रन्थों के गहन अध्ययन के आधार पर नारियों को भी पुरुषों के समान वेद-पठन एवं अध्ययन का विधिवत् अधिकार दे दिया गया।

वर्तमान में पौराहित्य के क्षेत्र में भी महिलाओं का प्रवेश, सहभागिता निश्चित ही पुरुष सत्तात्मक समाज की बेड़ियां तोड़कर स्वयं को साबित करने की दिशा में एक सर्वविदित एवं श्लाघनीय तथ्य है जो भारतीय परम्परा, संस्कृति एवं इतिहास में नारियों की अहम् भूमिका हेतु मील का पत्थर सिद्ध हुआ है। दक्षिण भारत के कुछेक प्रान्तों जैसे कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र इत्यादि में यह गौरवमयी परम्परा सुपुष्ट हो रही है। महाराष्ट्र में भी महिला पण्डितों द्वारा कर्मकाण्ड एवं अनुष्ठानादि सम्पन्न करवाने के कार्य को अत्यन्त सामान्य एवं सम्मानजनक रूप से देखा जाता है तथा इसी प्रकार दक्षिण भारत में भी महिला पौरोहित्य तथा पण्डितों की समता एवं समानताभरी प्रथा अस्तित्व में है।

महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी (संस्कारधानी) पुणे की धार्मिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में कार्यरत समर्पित स्वनामधन्य संस्था 'शंकर सेवा समिति' की अति प्रगतिशील विचारधारा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण की स्वामिनी तथा लैंगिक समानता की कट्टर समर्थक अध्यक्षा 'मामी थट्टे' के आह्वान पर १९७५ में नारी अस्मिता जागरण हेतु दो बिन्दुओं पर क्रान्तिकारी परिवर्तन लाए गए हैं- प्रथम= प्राचीन वैदिक वैभव एवं संस्कृति की पुनः प्रतिष्ठा स्वरूप महिलाओं को पौरोहित्य तथा कर्मकाण्ड सम्पन्न करवाने की पात्रता दिलवाना। द्वितीय= वेद-विद्या, ज्ञानार्जन की आकांक्षा रखने वाली बालिकाओं के उपनयन अधिकार को सुनिश्चित करना।

इस सद्प्रयास की दिशा में अग्रसर होने के लिए 'मामी थट्टे' ने सर्वप्रथम डेढ़ सौ महिलाओं को पौरोहित्य के लिए प्रशिक्षित करने की व्यवस्था की। लगातार चार माह के लिखित एवं मौखिक प्रशिक्षण में मात्र बारह महिलाओं ने सफलता अर्जित की। प्रथम चरण में प्रशिक्षित श्रीमती शुभदा जोग तथा पुष्पलता धर्माधिकारी उन वरिष्ठ पण्डितों में से हैं जो अब तक स्वयं साढ़े पाँच हजार से अधिक महिला पण्डितों को प्रशिक्षित कर चुकी हैं।

दूसरे पग स्वरूप श्रीमती शुभदा जोग ने नौ कन्याओं को जनेऊ संस्कार के लिए चुनकर उनका व्रतबन्ध यानी यज्ञोपवीत संस्कार का अनुष्ठान सम्पन्न करवाया। इस दौरान महिलाओं को परम्परावादी, संकीर्ण मानसिकता के पक्षधर पूर्वाग्रही पुरुष समाज एवं पण्डितों के कड़े विरोध का सामना भी करना पड़ा। अब तो शनैः शनैः अनुकूलता की बयार बहने लगी है। वर्तमान में ये विदुषी महिलाएं गृह-प्रवेश, विवाह, सगाई, व्रत-पर्व, यज्ञ अनुष्ठान अत्यन्त कुशलता से सम्पन्न करवा रही हैं और इन्हें अत्यन्त सम्मान की दृष्टि

भारतीय संस्कृति की प्रतीक भव्य सिल्क साड़ी में लिपटी प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी सुविज्ञ, प्रबुद्ध स्नेहलता जी ग्यारह सौ से अधिक शादियां, नामकरण, मुण्डन, यज्ञ, शांति-पाठ सहित लगभग ३२ अंतिम संस्कार भी करवा चुकी हैं।

से देखा-जाना जाता है तथा पुरुष समाज में भी उन्हें लेकर कोई पूर्वाग्रह अथवा दुराग्रह दिखाई नहीं देता।

अतीत के रंगून तथा वर्तमान के बर्मा में एक आर्यसमाजी परिवार में जन्मी स्नेहलता शर्मा भी इसी प्रकार की सन्नारी हैं जो १९५३ में भारत में आ गईं। उनके दादा पुरोहित थे तथा माता-पिता परिवारजन नियमित रूप से यज्ञ-पाठ इत्यादि करते थे। परिवार में मिले विशुद्ध सात्विक, आध्यात्मिक, धार्मिक वातावरण व संस्कारों के कारण तथा आध्यात्म में विशेष स्वरुचि के कारण उन्हें वैदिक रीति-रिवाज, यज्ञ विधि-विधान बालपन से ही कण्ठस्थ थे। मेरठ में अर्थशास्त्र में परास्नातक डिग्री प्राप्त कर उन्होंने वहीं स्थानीय आर० जी० कॉलेज में अध्यापन कार्य शुरू कर दिया तथा १९६१ में विवाहोपरान्त वे अपने वकील पति के साथ बंगलूर में आ गईं। वहां एक पारिवारिक मित्र वरिष्ठ आर्यसमाजी के०एल० पोद्दार के सान्निध्य में आईं। उन्होंने स्नेहलता की वैदिक रीति-रिवाजों कर्मकाण्ड तथा दर्शन में अभिरुचि को पहचान कर उन्हें भारतीय परम्पराओं, वैदिक मन्त्रों/शब्दों में निहित गूढ़ अर्थों तथा वैज्ञानिक तथ्यों को समझाया तो स्नेहलता ने वैदिक मन्त्रों का समग्रता, गम्भीरता से पुनः गहन अध्ययन किया।

१९९० में उनके किसी रिश्तेदार की शादी के अवसर पर जब पण्डित ऐन मौके पर विवाह-स्थल से नदारद हो गया तो अचानक उस विषम स्थिति से उबरने के लिए स्नेहलता के परिजनों ने उन पर विवाह-संस्कार सम्पन्न करवाने के लिए दबाव बनाया। वे उस अप्रत्याशित स्थिति में विस्मित हो भौचक रह गईं कि उनके परिजन उनकी विद्वता पर इतना भरोसा कर रहे हैं! वह भी इस पुरुष सत्तात्मक समाज में! परन्तु सबने कहा कि वे घर में इतनी बार यज्ञ/ संस्कार सम्पन्न करवा चुकी हैं तथा उन्हें सभी विधि विधान, मन्त्र, रीति-रिवाज भलीभांति मालूम हैं तो स्नेहलता ने उत्साहित होकर अपने अर्जित एवं अभ्यासगत ज्ञान के बूते पर विवाह संस्कार सम्पन्न करवाया।

आज बंगलूर में ही नहीं बल्कि देश-विदेश के प्रतिष्ठित औद्योगिक घरानों में भी उन्हें कर्मकाण्ड सम्पन्न करवाने को बुलाया जाता है। भारतीय संस्कृति की प्रतीक भव्य सिल्क साड़ी में लिपटी प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी सुविज्ञ, प्रबुद्ध स्नेहलता जी ग्यारह सौ से अधिक शादियां, नामकरण, मुण्डन, यज्ञ, शांति-पाठ सहित लगभग ३२ अंतिम संस्कार भी करवा

आर्यसमाज बीकानेर (राज) में विवाह संस्कार सम्पन्न कराती पण्डिती रूपा देवी

चुकी हैं। हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, संस्कृत भाषा में पारंगत स्नेहलता कर्नाटक, गोआ, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, बिहार और पंजाब के अतिरिक्त विदेशों=अमरीका, यूरोप, कनाडा आदि में भी विवाह करवा चुकी हैं। वे शॉर्ट कट में विश्वास न करते हुए पूर्ण विधि-विधान के साथ इस धार्मिक, आध्यात्मिक, निःस्वार्थ निःशुल्क सेवा-अनुष्ठान को पूर्ण सद्भावना से सम्पन्न करती हैं।

१९९७ में उन्होंने अपनी एक विधवा सखी की पुत्री का विवाह कारज सम्पन्न करवाया जिसमें कन्या अपनी विधवा माँ द्वारा अपना कन्यादान करवाने की इच्छुक थी परन्तु पुरातनपंथी पुरुष पंडितों ने विधवा मां द्वारा कन्यादान करने की बात पर विवाह रस्में करवाने से इन्कार कर दिया। ऐसे में स्नेहलता जी ने तर्क दिया कि विधवा हो जाने पर क्या मां का दर्जा खत्म हो जाता है, मां से बढ़कर कन्यादान करने का अधिकारी और कौन हो सकता है? उन्होंने वह विवाह सम्पन्न करवाकर एक क्रान्तिकारी युग-परम्परा का शिलान्यास किया।

उनके स्वयं विधवा हो जाने पर भी लोगों ने कहा कि विधवा होने के कारण उन्हें विवाह कार्य सम्पन्न करवाने का अधिकार नहीं तो दिल्ली की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने उन्हें बताया कि विधवा होने से ऐसी कोई रोक या प्रतिबन्ध नहीं है, अतः वे निरन्तर गली-सड़ी त्याज्य परम्पराओं का त्याग कर निःस्वार्थ तथा पूर्ण सात्विक भाव से निज देश तथा विदेश में बसे भारतीयों के बीच अपनी संस्कृति की जड़ें मजबूत कर रही हैं। सदाशयता है हमारी कि शतायु हो कर इसी प्रकार वे इस ऋषि-परम्परा, वैदिक रीतियों को देश-विदेश में बांटती बढ़ाती भारतीय पांडित्य व सन्नारियों और भारत का गौरव बढ़ाएं।

(हरिगंधा से साभार)

सामाजिक चिन्तन

यौनापराध की बढ़ती घटनायें
समाज के लिये चिन्तनीय

❑कुलदीप सिंह ढांडा, संयोजक सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत हरियाणा
१५४५ अर्बन एस्टेट जींद-१२६१०२ (9466984200)

समाज सुधारने और इन्सान की मनोवृत्ति बदलने के लिये समाज के सभी तबकों को आगे आना होगा। तभी इस प्रकार की शर्मनाक घटनाओं को रोका जा सकेगा। इसके साथ साथ तेजी से समाप्त हो रहे भारतीय सामाजिक व नैतिक मूल्यों को भी पुनर्जीवित करना होगा। इसके लिए विशेष रूप से खाप पंचायतों को आगे आकर अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए।

समाचार-पत्र के मुखपृष्ठ पर नजर डालते ही या टेलीविजन का बटन दबाते ही मुख्य रूप से सामाजिक अपराधों की खबर देखने व सुनने को मिलती हैं, जिनमें विशेष तौर पर यौनाचार की घटनायें होती हैं। आज के समाज में बढ़ती जा रही ये घटनायें न केवल निन्दनीय हैं बल्कि चिन्तनीय भी हैं। बेलगाम होती इन घटनाओं से समाज का कोई अंग अछूता नहीं है। न हमारे नेता, न अफसरशाही, न बुद्धिजीवी, न साधु सन्त, समाजसेवक, प्रोफेसर, डॉक्टर- यहाँ तक कि धरती पर सोने वाला पूरा समाज इसकी गिरफ्त में है। दुनिया की घटनाओं पर दृष्टि डालें तो अमरीका के राष्ट्रपतियों बिल क्लिंटन का अप्राकृतिक व्यभिचार और वर्तमान ट्रम्प पर लग रहे आरोप चर्चा में हैं। यूरोप में इसके कारण अनेक नेताओं को अपने पदों से हाथ धोना पड़ा है। देश की बात करें तो तिवारी बिहारी व एक प्रशासनिक अधिकारी द्वारा चलती ट्रेन में महिला यात्री से दुर्व्यवहार का मामला और प्रदेश की बात करें तो कान्डे-मान्डे हमारे सामने हैं। विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों द्वारा अपनी शोधछात्राओं का व डॉक्टरों द्वारा अपने अधीन कार्यरत महिला कर्मचारियों और मरीजों का यौन शोषण एक आम बात हो गई है। ताजा मामले के रूप में हम दिल्ली विश्वविद्यालय की घटना को ले सकते हैं। तथाकथित साधु सन्तों की बात करें तो उनके अनुयायी भक्त महिलाओं के साथ खेली गई रास लीलाओं के किस्से सुन सुनकर तो आम लोग इनको आदर की बजाय नफरत की नजर से देखने लगेंगे।

जब इन लोगों के खिलाफ एफ आईआर होती है तो समाज के प्रभाव शाली लोग इनको बचाने के लिए आगे आते हैं। और इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस प्रकार की शर्मनाक घटनाएँ लगातार बढ़ती ही जा रही हैं।

मैं निजी तौर पर मानता हूँ कि इन्सान के अपने समाज से कटकर रह जाने के कारणों ने इसके लिये उर्वरा भूमि तैयार की है। आज बस की छत पर बैठे लड़के कालेज व स्कूल जाती लड़कियों पर कंकर मारते हैं और फब्तियाँ कसते हैं। मेरे को तो इसलिये चिन्ता नहीं है कि इन लड़कियों में मेरी लड़की नहीं है। और मैं पूर्ण रूप से गलतफहमी का शिकार हूँ कि यह घटना मेरी लड़की के साथ नहीं होनी क्योंकि मैं तो अपनी लड़कियों को कालेज या स्कूल में अपनी गाड़ी से छोड़कर व लेकर आता हूँ। यदि मैं समाज से सरोकार रखता तो अपनी लड़कियों की सुरक्षा समाज की लड़-कियों में ढूँढता।

कुछ दिन पहले अखबारों में छपी एक खबर के अनुसार एक बाप अपनी खुद की अबोध बच्ची के साथ छः महीने तक यौनाचार करता रहा। यह पढ़कर तो समस्त समाज का सिर नीचा हो गया और पिता पुत्री का पवित्र रिश्ता भी कलंकित हो गया।

इन कुकर्मों के लिये इस तैयार भूमि में बीज बोए मनोरंजन के साधनों ने। चाहे प्रचार प्रसार के साधन हों, चाहे फिल्म व सीरियल हों, चाहे हमारी रागनियाँ या गीत हों, चाहे कथाएँ व रासलीलाएँ हों पर सारे खोंसड़ा बाजै सै। या इसको यूँ कह लो कि साधारण सी प्रजनन प्रक्रिया को अति मनोरंजन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। फिरकी वाली कल फिर आना जैसै गाने बार बार सुनूँगा तो मुझ ७६ वर्षीय का मन भी करेगा कि फिरकी वाली नहीं तो चिमटे वाली जरूर आनी चाहिये।

जब तक हमारे पास अश्लील मनोरंजन के साधनों का स्वच्छ विकल्प नहीं होगा तो हमारी मनोदशा भी नहीं बदलेगी। इसमें शिक्षा व अशिक्षा, गरीबी व अमीरी, शहरी व ग्रामीण, धर्म व जात का भी कोई भेद नहीं है। इससे समाज का कोई हिस्सा अछूता नहीं है। लेकिन यह भी सत्य है कि हर समाज के एक हिस्से में कुछ पुरुष व महिलाएँ ऐसे मिल जायेंगे जिनमें लोग

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

❒सहदेव समर्पित

बल्लभीपुर का राजकुमार वीरसिंह अपने साथियों और अंगरक्षकों के साथ शिकार को निकला और एक जंगली सूअर का पीछा करते-करते अपने साथियों से बिछड़कर रास्ता भटक कर शोलापुर के जनाने बाग में जा पहुँचा। सूर्यदेव अपनी प्रचण्ड शक्ति का प्रदर्शन करके ढलने का रुख कर चुके थे। गर्मी और उमस में पसीने और धूल से सने राजकुमार वीरसिंह ने बाग की शीतल छाया में घड़ी दो घड़ी सुस्ताने का विचार किया। पोखर में घोड़े को पानी पिलाकर स्वयं भी जी भर कर स्वच्छ पानी पिया और घोड़े को एक वृक्ष के नीचे बाँधकर शीतल छाया में सुस्ताने के लिए एक ओर चल दिया।

राजकुमार को सहसा बहुत सी लड़कियों की खनखनाती आवाज सुनाई दी। दस-बारह लड़कियाँ- आपस में बतियाती खिलखिलाती उसी ओर आ रहीं थीं। कुछ सोचकर राजकुमार घनी झाड़ियों की ओट में हो गया और उनकी बातें सुनने का प्रयास करने लगा। वेश-भूषा और रंग रूप से वीरसिंह को यह समझते देर न लगी कि वे शोलापुर की राजपुत्री और उसकी सहेलियाँ थीं। विवाह के योग्य युवतियाँ पुरुषों के सम्बन्ध में ही बात कर रहीं थीं।

'विवाह भी कैसा सामाजिक बन्धन है कि बचपन की सहेलियाँ बिछड़ जाती हैं।'

'और फिर जीवन साथी अच्छा मिल गया तो ठीक- अन्यथा- -सारी जिन्दगी पुरुषों के अत्याचार सहती रहो-'

'पुरुष भी अच्छा क्या होगा। सभी पुरुष एक जैसे होते हैं--अपने झूठे अहंकार और शक्ति के घमण्ड में स्त्रियों की भावनाओं का सम्मान नहीं करते।'

पुरुषों की निन्दा सुनकर वीर सिंह की भौंहें तन गईं। वह अपने आपको पुरुष जाति का प्रतिनिधि समझ रहा था- और लड़कियों ने उसके स्वाभिमान को आहत किया था।

तभी एक दूसरी लड़की बोल उठी-'अपनी बाजू को तेल में भिगोकर तिलों में डाल दो, जितने तिल बाजू से चिपक जाएँगे। उतने दोष एक पुरुष में होते हैं।'

'पुरुषों के दोष निकालने में क्या फायदा-अगर स्त्री समझदार हो तो वह पुरुष को अपनी अँगुलियों पर नचाती है।' दूसरी सखी ने कहा।

'कहने से क्या होता है, जब वक्त आता है तो सारी समझदारी रफूचक्कर हो जाती है।'

चिन्तामणि ने कहा-'देख लेना, जब वक्त आएगा। मैं करके दिखा दूँगी।'

राजबालाएँ बातें करते-करते एक ओर को निकल गईं, राजकुमार वीरसिंह आहत हो गया। उसके मान ने जोर मारा तो उसका हाथ तलवार की मूठ पर चला गया। राजकुमारी की बात से उसका खून खौल उठा। परन्तु परिस्थितियों को समझकर उसने स्वयं को संयत किया और चुपचाप घोड़े पर सवार होकर मार्ग का अनुमान लगाकर अपने नगर की ओर चल दिया।

❍ विवाह योग्य वीरसिंह के मन में भंयकर ऊहापोह मची थी। उसने यह निश्चय कर लिया था कि इस मानिनी राजकुमारी से विवाह कर वह उसका मानमर्दन अवश्य करेगा। तभी उसके आहत स्वाभिमान पर मरहम लगेगी। राजकुमार के विवाह के लिए अनेक राजकन्याओं के प्रस्ताव आ रहे थे। वे अत्यन्त समृद्ध शासकों की पुत्रियाँ और अनिन्द्य सुन्दरियाँ थी। वैभव उनके चरणों में लोटता था। राजकुमार की स्वीकृति के संकेत मात्र की प्रतीक्षा थी-लेकिन वीरसिंह इन रिश्तों में कोई रुचि नहीं ले रहा था। पर उसी क्रम में जब उसे शोलापुर की राजकुमारी सुन्दर बाई का प्रस्ताव मिला तो उसने तुरन्त स्वीकृति दे दी। चिन्तित राजा जगत सिंह का चेहरा खिल उठा। शीघ्रता से ही सुविधाजनक मूहूर्त्त लग्न में राज कुमार वीरसिंह व राजकुमारी सुन्दरबाई का विवाह हो गया। प्रजा में उल्लास था। कई दिन तक समारोह चलते रहे। महाराज केसरी सिंह ने वरयात्रियों का स्वागत-सत्कार कर अपनी बेटी को मूल्यवान उपहार देकर भरी आँखों से विदा कर दिया।

वल्लभीपुर में भी उल्लास का नजारा था। राजकुमार के विवाह पर खूब दान किया गया। कैदियों को मुक्त किया गया। बन्दनवारें लगाई गई- अग्निक्रीड़ा (आतिशबाजी) की गई। राजवधू के स्वागत में नगर भर ने बलैया ली। युवराज वीरसिंह ने सुन्दरबाई के रहने की व्यवस्था नगर के बाहर स्थित एक बहुत सुन्दर महल में कर दी, जहाँ सब प्रकार की सुविधाएँ और सज्जाएँ विराजमान थीं। राजमाता ने इसका कारण पूछा तो युवराज ने माता से विनम्र

निवेदन कर दिया- कि यह हमारा निजी मामला है, और सोच-समझकर ही मैंने यह निर्णय लिया है। पुत्र की योग्यता व क्षमता पर विश्वास रखने वाली राजमाता ने प्रतिरोध नहीं किया।

सुन्दरबाई दो तीन दिनों तक वैवाहिक समारोहों के लाड़ चाव में व्यस्त रहीं, लेकिन तीन दिन तक युवराज ने दर्शन नहीं दिए। सुन्दरबाई का हृदय आशंकित हो उठा-शादी में आए हुए पारिवारिक मेहमान भी विदा हो चुके थे। उल्लास का वातावरण धीमा पड़ रहा था। युवराज की प्रतीक्षा में राजवधु का मन तरह-तरह की कल्पनाएँ कर रहा था। कभी वह उनके राजकार्यों में व्यस्त होने की बात सोचकर मन को सांत्वना देती तो कभी उनकी नाराजगी के अज्ञात कारण के बारे में विचार करती। आखिर उसने प्रतीक्षा करके अपनी निजी सेविका को कारण पता लगाने के लिए भेजा।

दासी के बाहर निकलते ही उसे किसी व्यक्ति ने राजवधु के नाम राजकुमार का पत्र दिया। दासी ने उलटे पाँव लौटकर सुन्दरबाई को दे दिया। युवराज का पत्र शीघ्रतापूर्वक पढ़ कर सुन्दर बाई सन्न रह गई। राजकुमार जान बूझ कर उसके पास नहीं आए थे। राजकुमार ने बाग की बातचीत का जिक्र किया था-तुम अपनी सहेलियों में डींग हाँकती थी- मैं तो अपने पति को अँगुलियों पर नचाऊँगी। अब दिखाओ तो अपनी योग्यता?

सुन्दर बाई क्षणों तक पत्थर की मूर्ति बनकर खड़ी रही, जब उसे अपनी स्थिति का संज्ञान हुआ तो वह बिस्तर पर जा पड़ी और निढ़ाल हो गई। विवाह से पहले लड़कियाँ न जाने कैसी-कैसी सुखद कल्पनाएँ करती हैं। उसने भी की थी। पर युवराज के व्यवहार ने उसके हृदय को खण्डित कर दिया था। राजकुमार ने विवाह करके उसका परित्याग कर दिया था। वह भी कहीं स्मृतियों के गहन अंधकार में विलीन हो चुकी बातचीत की छोटी सी घटना पर। पूरे एक दिन और एक रात राज कुमारी बिना कुछ खाए-पीए पड़ी रही- उसके मन में उथल पुथल मचती रही। वह राजपुत्री थी। उसने कभी अपनी मर्जी के आगे कोई बाधा नहीं देखी थी। यहाँ तो उसके जीवनाधार ने ही विश्वास खण्डित कर दिया था।

सुन्दरबाई ने गहन ऊहापोह के बाद अपने पति की चुनौती को स्वीकार कर लिया। उसने अपनी स्मृति पर जोर डाला-ऐसी कोई बात उसने नहीं कही थी, जिससे पुरुषों का अपमान होता हो- और वह अपने पति से क्षमा याचना कर सके। क्षमा से उसका अहंकार शमित होगा भी नहीं। यह एक नारी के स्वाभिमान का विषय था। फिर भी वह वीर क्षत्राणी थी-यही सही-वह कुछ निश्चय करके अपने आसन से उठी और अपनी निजी सेविका को आवश्यक निर्देश देकर कुछ तैयारी करने लगी।

उसने गुप्त रूप से अपने पिता के पास पत्र लिखा-पर उसमें याचना नहीं थी। उसने लिखा- वह अपनी लड़ाई स्वयं लड़ना चाहती है-अपने तरीके से। उसने अपने पिता से एक घोड़ा, सैनिक के वस्त्र और एक तलवार मँगवाई। पिता चिन्तित तो अवश्य हुए- पर उन्हें अपनी मानिनी बेटी पर पूर्ण विश्वास था-उन्होंने गुप्त रूप से गहन वन से सुन्दरबाई के महल तक सुरंग का निर्माण कराकर आवश्यक सामग्री भेज दी। घोड़ा और सैनिक वर्दी मिलते ही सुन्दरबाई ने अपनी विश्वासपात्र सेविका को कहा कि कोई आए तो कहना कि रानी आवश्यक साधना कर रही है, किसी से मिल नहीं सकती, पगड़ी, जूते और पूर्ण पुरुष सैनिक वेश धारण कर सुरंग के रास्ते निकल गई।

❍ अगले दिन महाराज जगतसिंह ने देखा कि एक बहुत सुन्दर, सजीला, छबीला नौजवान घुड़सवार काफी देर से राजभवन के आस-पास चक्कर काट रहा है। महाराज ने उस युवक को अपने पास बुलाकर पूछा तो उसने अपना नाम रतनसिंह बताया-

'महाराज मैं राजपुत्र हूँ और नौकरी की तलाश में घूम रहा हूँ।'

'क्या कार्य कर सकते हो?'

'महाराज, राजपुत्र के लिये कुछ भी अकार्य नहीं। जो कार्य अन्य कोई करने से संकोच करे, वह मैं कर सकता हूँ।'

'वेतन?'

'रहने की अलग व्यवस्था हो, जो आप कृपा कर देंगे वह स्वीकार है।'

महाराज ने कुछ पूछताछ करके उसे राजभवन-परिसर के रक्षक दल में भर्ती कर लिया।

सुन्दर बाई ने राहत की सांस ली। अब वीरसिंह से उसका वास्ता पड़ेगा ही पड़ेगा और किसी न किसी तरीके से उन्हें वह उनकी गलती का अहसास कराएगी। एक तरफ उसे अपने पति की नाराजगी का दुःख था दूसरी ओर वह उसके नारी के प्रति व्यवहार व दृष्टिकोण को लेकर आहत थी। अब मामला पति-पत्नी का नहीं था। अब तो स्त्री के स्वाभिमान का मामला था, जिसकी उसे एक मर्यादा में रहकर रक्षा करनी थी। वह सन्नद्ध होकर रत्नसिंह के रूप में अपने सैनिक कर्त्तव्य का निर्वहन करती, उसके बाद सबसे अलग-रहन-सहन, खान-पान, ध्यान स्नान करती-किसी को इस बात का आभास भी न हुआ कि यह चढ़ती उम्र का मासूम नौजवान कोई लड़की भी हो सकता है।

दिन बीतते गए। सुन्दरबाई को कोई मौका न मिला, वीरसिंह से बात करने का। कोई साधारण सैनिक-बात करता भी तो कैसे? अचानक एक दिन पूरे राजभवन परिसर में हड़कम्प मच गया। लोग इधर-उधर भाग रहे थे-कुछ लोग जान बचाकर महाराज के पास जा पहुँचे और त्राहि-त्राहि करने लगे। वस्तुतः आज सुबह से ही एक बड़ा भयंकर जंगली सिंह नगर में घुस आया

Unfiled Notes Page 19

था- लोगों को चीखते-चिल्लाते देख वह डर और क्रोध से थोड़ा बहुत नुकसान करता हुआ राजभवन परिसर के बाग में घुस गया था। महाराज जगतसिंह ने सिंह को मारने के लिए तुरन्त युवराज वीरसिंह को एक विशेष रक्षक टुकड़ी के साथ भेज दिया। युवराज ने सिपाहियों के साथ बाग को घेर लिया। हाथों में नंगी तलवारें लिए सिपाही सिंह को ललकारने लगे। वनराज शीतल छाया में विश्राम कर रहे थे। शोर शराबा सुनकर वनराज ने अंगड़ाई ली। बाग के द्वार की ओर वीरसिंह सावधान खड़ा था। द्वार की ओर आते हुए सिंह को देखकर वीरसिंह ने पैतरा बदलकर सिंह पर जोर से तलवार चलाई, लेकिन सिंह एक ओर को उछल गया। जब तक वीरसिंह दूसरे वार के लिए संभलता, सिंह ने बिजली की सी फुर्ती से पलट कर उसपर दाएँ पंजे का भरपूर वार किया। वीरसिंह इसे झेल न सका-वह धड़ाम से एक ओर गिर पड़ा।

पास में ही सैनिक वेश में खड़ी सुन्दरबाई यह सब मूर्तिवत् देख रही थी। सिंह का खूंखार रूप देखकर सभी सैनिक भाग खड़े हुए थे। वीरसिंह पृथ्वी पर असहाय पड़ा हुआ था, सिंह उस पर आक्रमण करने ही वाला था-कि रतन सिंह के वेश में उपस्थित सुन्दरबाई को स्थिति की गंभीरता समझ आ गई। वह बिना एक पल भी गँवाए अपनी छोटी सी कटार लेकर उछल कर आगे आ गई और वीरसिंह पर झपट रहे सिंह पर इतना भरपूर हाथ मारा कि सिंह के दो टुकड़े हो गए। सिंह के गिरते ही वह तुरन्त वीरसिंह के पास पहुँची, उसकी नब्ज देखी, उसके मुँह में पानी डाला और अपने घुटने पर उसका सिर रखकर अपने उत्तरीय से हवा करने लगी। वीर सिंह की बेहोशी टूटी और वह क्षण भर में सब समझ गया। तब तक भागे हुए सैनिक भी सिर झुकाए इकट्ठे होने लगे।

वीरसिंह की चोट गंभीर नहीं थी। वह उठ खड़ा हुआ। कायर सैनिकों पर उपेक्षापूर्ण दृष्टि डालकर रतनसिंह की ओर कृतज्ञता से देखा। रतनसिंह गर्दन झुकाए खड़ा था। उसके चेहरे पर सन्तोष की रेखा थी। युवराज ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा- भाई रतनसिंह- तुमने मेरे ऊपर बहुत बड़ा अहसान किया है- तुमने मेरी जान बचाई है। मैं तुम्हें ईनाम देना चाहता हूँ-बोलो क्या पुरस्कार चाहते हो।'

रतनसिंह ने विनम्रता से कहा- 'महाराज आपकी जान बच गई, यही मेरा इनाम है- मैं आपके काम आया- यह मेरा सौभाग्य है।'

वीरसिंह उसका हाथ पकड़कर महल की ओर ले गए। रत्नसिंह! आज से तू मेरा मित्र है, तू मेरा भाई-तू आज से इस राज्य का नौकर नहीं, आधा मालिक है- युवराज कहे जा रहे थे- सुन्दबाई सुनकर मन ही मुसकरा रही थी- 'वाह युवराज, पूरी मालकिन को आधा मालिक बना रहे हो-'

महाराज ने इस घटना को सुना तो उनका भी रतनसिंह के प्रति स्नेह उमड़ आया- बेटा, आज से मेरा एक बेटा नहीं-दो बेटे हैं-आज से तुम्हारी सैनिक की नौकरी खत्म और तुम वीर सिंह के साथ रहोगे।

रतनसिंह ने कृतज्ञता से सिर झुका लिया। उस दिन से वीरसिंह और रतनसिंह की अद्‌भुत मित्रता हो गई, साथ खाते, साथ पीते साथ घूमते। यहाँ तक कि युवराज वीरसिंह का क्षण भर को भी रतनसिंह के बिना मन न लगता था। जब वह स्नानादि के लिए भी आँखों से ओझल होता तो वह बेचैन हो उठता। सुन्दरबाई ने जब देखा कि लोहा गर्म है तो उसने एक दिन मौका देखकर चोट की- 'युवराज, अपने माता-पिता परिवार जनों से बिछुड़े बहुत दिन हो गए, मैं उनसे मिलने जाना चाहता हूँ।'

युवराज सन्न रह गया। वह उससे बिछुड़ने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। आखिर उसके आग्रह को देखते हुए युवराज ने हाँ कह दी और शर्त रख दी कि वह एक महीने से ज्यादा समय नहीं लगाएगा।

'रतनसिंह, कहीं ऐसा न हो कि तुम मुझे भूल जाओ-'

स्मृति स्थिर रखने के लिए एक दूसरे की भुजाओं पर अपने नाम गुदवा लिए। वीरसिंह ने उसे अपना नाम टंकित एक छोटी सी तलवार भी यादगार के रूप में दी। महाराज और महारानी को प्रणाम कर, वीरसिंह से गले मिलकर रतनसिंह घोड़े पर सवार होकर चल दिया। वन में गुप्त सुरंग के पास पहुँचकर उसने घोड़े को अपने पिता के नगर की ओर दौड़ा दिया तथा अपने महल में पहुँचकर सेविका से कहा-द्वार खोल दो-अपना काम बन चुका है। फिर से राजवधु के वस्त्र धारण कर सुन्दरबाई सामान्य रूप से रहने लगी। उसकी दृष्टि से उसने पुरुष पर नारी की श्रेष्ठता को सिद्ध कर दिया था।

❍ उधर रतनसिंह के बिना तीन दिन में ही वीरसिंह का मन उचाट हो गया। इसी अवस्था में उसने सोचा कि चलो, आज सुन्दरबाई को देखते हैं-बड़ी बढ़-चढ़कर बातें बना रही थी-अब तो अक्ल ठिकाने आ गई होगी। पूछता हूँ कैसे मर्दों को अंगुलियों पर नचाते हैं। वीरसिंह जब सुन्दरबाई के महल में आया तो सुन्दरबाई अपने आसन पर निश्चिंत बैठी थी। उसे अनुमान नहीं था कि वीरसिंह इतनी शीघ्रता से आ जायेंगे। उठकर बाहर आई और अपने पति को चरण-स्पर्श कर आदर सहित प्रणाम किया। पौरुष के दम्भ में वीरसिंह ने उत्तर भी न दिया-अकड़ कर सीधा सवाल फैंका-

'सुन्दरबाई- तुम तो कहती थी कि पुरुष से नारी श्रेष्ठ होती है- अंगुलियों पर नचाने की बात करतीं थीं अब तक तो तुमने कोई चमत्कार नहीं दिखलाया--'

सुन्दरबाई ने मुस्कराते हुए

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

त्याग भाव

❒स्वामी श्रद्धानन्द जी

नहि देहभृतां शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते।।
अनिष्टमिष्ट मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित्।।
–गीता १८ अ० ११,१२

शब्दार्थ–(देहभृतां) कोई भी शरीरधारी (अशेषतः कर्माणि) सम्पूर्ण कर्मों को (त्यक्तुम्) छोड़ने के लिये (न हि शक्यम्) समर्थ नहीं है। इसलिये (यस्तु) जो भी व्यक्ति (कर्म फलत्यागी) कर्मों के फलों को त्याग करने वाला है यथार्थ में (सः) वह व्यक्ति ही (त्यागीत्यभिधीयते) त्यागी कहलाता है। (अत्यागिनाम्) त्याग भाव से न काम करने वाले लोगों को (प्रेत्य) मृत्यु के बाद दूसरे जन्म में (अनिष्टं, इष्टं, मिश्रं च) बुरा, भला या मिलवां यह (कर्मणः) कर्मों का (त्रिविधं फलम्) तीन प्रकार का (भवति) भोगना पड़ता है। (सन्यासिनां तु) किन्तु संन्यासियों को (क्वचित्) किसी प्रकार का भी कर्मफल (न भवति) नहीं भोगना पड़ता।

उपदेश–कर्मों से कौन भाग सकता है? किसी आश्रम में भी कर्म मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ते। क्या संन्यासी कर्म से पृथक् हो सकता है? भला जब मानसिक व्यवहार ही सारा रुक जावे तो संन्यासी क्या? उसके कर्तव्य क्या? संन्यासी का परम धर्म निडर होकर पक्षपात से रहित धर्म का आन्दोलन करके उसका सांसारिक मनुष्यों के हित के लिए प्रचार करना है परन्तु जिसने वाणी के कर्म को रोक दिया वह सत्य का प्रचार कैसे कर सकेगा? इसलिये कर्म का त्याग करना असंभव ही है।

त्याग किसे कहते हैं? फलों का त्याग ही सच्चा त्याग है। यह सुनकर सांसारिक पुरुष प्रश्न करेंगे कि क्या दीर्घदर्शी अनुभवी मनुष्य समय के प्रवाह को नहीं देख सकते? क्या वे अपने देश की भलाई के कारण को जाने बिना ही और उसके परिणामों का पता लगाये बगैर ही अंधाधुंध काम करेंगे? यह प्रश्न बड़े आवश्यक हैं किन्तु साथ ही इनके पीछे अविद्या की लीला है। क्या तुमने कभी देखा है कि जो काम किसी परिणाम से सोचा जाय वही प्राप्त होता है? कदाचित् नहीं। हाँ, जब दूसरे प्रकार का अच्छा परिणाम निकल आता है तो काम करने वाले की दूरदर्शिता की प्रशंसा की जाती है। मनुष्य निर्बल है, मनुष्य की सब शक्तियाँ अल्प हैं, तब कैसे वह जान सकता है कि उसके अमुक काम का क्या परिणाम होगा? हाँ! एक बात तो मूर्ख भी समझ सकता है। यदि उसको उसका कर्त्तव्य बतला दिया जाय तो परिणाम को बिना सोचे वह अपने कर्त्तव्य को पूरा कर सकता है। इसलिये कृष्ण भगवान् कहते हैं कि फल भोग की इच्छा इसलिये नहीं करनी चाहिए कि तुम निश्चय के साथ कह नहीं सकते कि जिस कार्य का तुमने एक विशेष परिणाम सोच रखा है, उसका वह निश्चित परिणाम होगा ही। तुम एक इष्ट कार्य को बड़ी रुचि से करते हो, इस विचार से कि उसका विशेष परिणाम तुम्हारी रुचि के अनुकूल होगा। तुम दूसरे कार्य को जिससे घृणा है, बाधित होकर करते हो, परन्तु परिणाम तुम्हारी इच्छा के विपरीत निकलता है। एक काम को तुम दोनों भावों से करते हो, परिणाम एक तीसरी प्रकार का निकल आता है। तुम्हारी इच्छा चाहे कुछ ही क्यों न हो परन्तु तुम्हारे कर्मों का फल मिला और उसके पश्चात् कुछ भी स्थिर नहीं रहा। जिस संन्यासी ने फल को त्याग दिया है वह दिन रात कर्म करता हुआ भी उनके संस्कारों का दास नहीं बनता इसलिए कि वह उनके अंदर फंसता ही नहीं है।

झूठे त्याग ने भारतवर्ष देश को रसातल तक पहुंचा दिया है। ईश्वरीय नियम के विरुद्ध कर्म करते हुए मनुष्य समाज का कोई अंग स्थिर नहीं रह सकता। राज्य का प्रबन्ध करता हुआ राजा जनक क्यों विदेह मुक्त प्रसिद्ध हुआ? इसलिये कि एक तरफ जहाँ आग से एक जांघ के जलने का उसे शोक न था वहाँ दूसरी ओर उत्तम से उत्तम भोगों का सुख उसे विचलित न होने देता था।

इसलिए मेरे प्रिय पाठकगण! इन कारणों से फल भोग की इच्छा को छोड़कर सब काम करो। मैं जानता हूँ यह कैसा कठिन मार्ग है! इस मार्ग में चलते हुए मैंने अनेक ठोकरें खाई हैं। सम्भवतः आप लोगों ने मुझसे अधिक ठोकरें न खाई होंगी। मेरा अनुभव मुझे बतलाता है कि यह मार्ग कठिन है। इसके अतिरिक्त जिधर जाओगे भटकते फिरोगे। आओ, इसलिए एक दूसरे को बल देते हुए हम सब इसी निष्काम मार्ग पर चलने का यत्न करें। हम सब निर्बल हैं, दीन हैं परन्तु जिस परमात्मा ने अपनी अपार दया से अपने ज्ञान के भण्डार को हमारे लिए खोल दिया है, वह सर्वशक्तिमान है। हमारा पिता सर्वज्ञ और सर्वोपरि विराजमान है। अगर हम उसका सहारा ढूंढें, यदि शुद्ध मन से उसके दरबार में याचक बनकर जावें तो हम में भी बल आ सकता है। परमात्मा ने स्वयं हमें प्रार्थना की विधि बतलायी है। उन्होंने स्पष्ट आज्ञा दी है कि मुझ बल-भण्डार से बल मांगो। मन, वाणी और कर्म को शुद्ध करके तीनों के द्वारा प्रार्थना करो, तुम्हारी प्रार्थना निष्फल न होगी। हमारे अविश्वासी मन भटकते फिरते हैं। पिता हमारे रोम-रोम में

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

आत्मिक उन्नति

जीवन मृत्यु रहस्य एवं आनन्दमय मोक्ष प्राप्ति

एक प्रश्न यह भी है कि क्या हम मृत्यु और जन्म के चक्र से छूट सकते हैं। इसका उत्तर हां में है। वेद और शास्त्र इसका समाधान बताते हैं।

❒मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

मनुष्य जीवन हो या पशु-पक्षियों का जीवन, सभी का जीवन, जीवन व मृत्यु के पाश में बन्धा व फंसा हुआ है। कोई भी मनुष्य या प्राणी स्वेच्छा से मरना नहीं चाहता। वह चाहता है कि वह सदा इसी प्रकार से बना रहे। उसे कभी कोई रोग न हो। दुःखों को कोई भी प्राणी पसन्द नहीं करता। परन्तु फिर भी जीवन में वृद्धि व ह्रास तथा सुख व दुःख सहित जन्म-मृत्यु का चक्र चलता रहता है। हम देखते हैं कि हमारे परिवार व हमारे निकटवर्ती अन्य भी जो लोग हमसे आयु में बड़े थे, वह हमारे सामने कुछ कुछ अन्तराल के बाद दिवंगत होते रहे। कोई रोगी होकर मृत्यु को प्राप्त होता है तो कोई अचानक हृदयाघात आदि से मर जाता है। मृत्यु के अनेक कारण हो सकते हैं। अतः जीवन व मृत्यु को जानना हम सबके लिए आवश्यक है जिससे हम जीवन-मृत्यु विषयक सत्य स्थिति को जानकर अन्यों की अपेक्षा कम दुःखी हों या हो सके तो योग व ध्यान में प्रवृत्त होकर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लें जिससे हमारा यह जीवन मृत्यु के डर के साये में न बीते और हम भय मुक्त व प्रसन्न रहते हुए प्रतिदिन व हर पल सुख व शान्ति से अपना समय सार्थक व रचनात्मक कार्यों को करते हुए व्यतीत करें।

जीवन और मृत्यु को जानने के लिए हमें ईश्वर व जीवात्मा के अस्तित्व व स्वरूप को भी जानना आवश्यक है। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप है। वह अनादि, नित्य और अनन्त है। ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। ईश्वर के अतिरिक्त इस संसार में जीवात्मा और प्रकृति का भी अस्तित्व है। जीवात्मा भी चेतन तत्व व पदार्थ है। यह भी अनादि, नित्य, अमर, अनन्त व एकदेशी है। जीवात्मा अल्पज्ञ और ससीम है। अनन्त का अर्थ है कि जिसका अन्त कभी नहीं होता। हम मनुष्य व इतर प्राणियों की मृत्यु को होता देखते हैं। यह मृत्यु शरीर की होती है। इस शरीर में विद्यमान चेतन जीवात्मा कभी मरता नहीं अपितु ईश्वर की प्रेरणा से पूर्व शरीर से निकल कर अपने कर्मानुसार अपने भावी माता-पिताओं के पास चला जाता है और वहां ईश्वरीय व्यवस्था से उनके शरीरों में प्रवेश कर ईश्वर द्वारा बनाये नियम के अनुसार जन्म लेता है। यह जीवात्मा अत्यन्त सूक्ष्म होता है। यदि ईश्वर, जीव व प्रकृति की सूक्ष्मता पर विचार करें तो जीवात्मा से सूक्ष्म ईश्वर है और जीवात्मा प्रकृति से भी सूक्ष्म है। यद्यपि प्रकृति भी अत्यन्त सूक्ष्म है परन्तु जीवात्मा सत्व, रज व तम गुणों वाली मूल प्रकृति के सूक्ष्म कणों से भी अधिक सूक्ष्म है। जीवात्मा संख्या में असंख्य व अनन्त हैं। इन जीवों ने अपने पूर्व जन्मों में जो कर्म किये होते हैं उनके आधार पर ईश्वर इन्हें उन कर्मों का सुख व दुःख रूपी फल देने के लिए मनुष्यादि नाना प्रकार की योनियों में से किसी एक में जन्म देता है।

ईश्वर न्यायकारी व दयालु है। वह किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। पक्षपात तभी किया जाता है कि जब निजी स्वार्थ, इच्छा व दूसरे से कोई अपेक्षा हो। ईश्वर में ये बातें नहीं है। वह जीवों को सुख देना चाहता है परन्तु इसके लिए तर्क व न्यायपूर्ण व्यवस्था यह है कि जीव के कर्म अच्छे वा शुभ हों। जिन्होंने शुभ कर्म किये होते हैं वे सुख पाते हैं और जिनके सभी व अधिकांश कर्म अच्छे नहीं होते हैं उन्हें निम्न वा नीच योनियों में जाना होता है जहाँ उन्हें दुःख प्राप्त होता है। इस दुःख का अभिप्राय भी जीवों को उनके कर्मों के फल भुगाकर उनका सुधार कर उन्हें मनुष्य योनि में उन्नत करना होता है। अन्य योनि के जीवों को देख कर तथा वेद व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों को पढ़कर मनुष्यों को भी यह सीख व शिक्षा मिलती है कि वे भी अच्छे कर्म करें जिससे उन्हें इस जन्म व परजन्म में नीच योनियों में जन्म लेकर दुःख न भोगना पड़े।

यह भी जान लें कि प्रकृति जड़ है जिसमें कोई संवेदना या सुख, दुःख की अनुभूति नहीं होती। यह सृष्टि मूल प्रकृति से सर्गारम्भ पर ईश्वर के द्वारा बनाई जाती है और ईश्वर का एक दिन पूरा होने पर इसकी प्रलय हो जाती है। प्रलय का अर्थ होता है कि सूर्य, पृथिवी व चन्द्र आदि नष्ट होकर अपने कारण, मूल प्रकृति में विलीन हो जाते हैं।

ईश्वर ने मनुष्य व प्राणियों के जो शरीर बनाये हैं वे अन्नमय शरीर हैं। ये शरीर सीमित अवधि तक ही जीवित

रह सकते हैं। ये अनित्य वा मरणधर्मा होते हैं। जिस प्रकार एक भवन पुराना होने पर कमजोर होकर गिर जाता है, लगभग उसी प्रकार से मनुष्य आदि प्राणियों के शरीर भी शैशवास्था के बाद वृद्धि को प्राप्त होकर युवावस्था में पूर्ण विकास को प्राप्त होते हैं। इस युवावस्था में शारीरिक शक्तियां अपने चरम पर होती हैं। कुछ काल तक यह अवस्था बनी रहती है और फिर वृद्धावस्था आरम्भ हो जाती है। वृद्धावस्था को प्राप्त होने पर मनुष्य का शरीर जीर्ण होने लगता है और लगभग १०० वर्ष से पूर्व ही अधिकांश मनुष्यों का शरीर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

सृष्टि का एक प्रमुख नियम यह है कि जिसकी उत्पत्ति होती है उसका नाश भी अवश्य होता है। उत्पत्ति अभाव से नहीं होती और इसी प्रकार नाश होने पर भी किसी भौतिक व नित्य चेतन व जड़ पदार्थ का अभाव नहीं होता। जीवात्मा शरीर में रहे या मृत्यु होने पर शरीर से निकल जाये, यह अपनी मूल अवस्था जो विकाररहित होती है, में ही रहता है। सृष्टि की आदि में ईश्वर मूल प्रकृति में विकार उत्पन्न कर सभी जीवात्माओं के लिए सूक्ष्म शरीर का निर्माण करते हैं। यह सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ रहता है। सभी जन्मों में साथ रहता है और सभी योनियों में मृत्यु होने पर भी आत्मा के साथ स्थूल शरीर से निकल कर ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार नये शरीर में चला जाता है। इससे ज्ञात होता है कि जन्म व मरण अर्थात् जीवन व मृत्यु का कारण हमारे शुभ व अशुभ कर्म होते हैं जिन्हें पुण्य व पाप कर्म भी कहा जाता है।

मृत्यु के बारे में हमने यह जाना है कि शरीर के दुर्बल व रोगी होने पर शरीर की मृत्यु होती है। मृत्यु का अर्थ होता है कि इस शरीर का जीवात्मा जिसे विज्ञान की भाषा में मनुष्य जीवन का साफ्टवेयर कह सकते हैं, शरीर से निकल जाता है और हार्डवेयर के रूप में शरीर यहीं रह जाता है जिसका दाह संस्कार कर दिया जाता है।

एक प्रश्न यह भी है कि क्या हम मृत्यु और जन्म के चक्र से छूट सकते हैं। इसका उत्तर हां में है। वेद और शास्त्र इसका समाधान यह बताते हैं कि यदि हम अशुभ कर्म न करें, पूर्व कृत अशुभ व पाप कर्मों का भोग कर लें और इस जीवन में ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि का ज्ञान प्राप्त कर ईश्वरोपासना कर ईश्वर का साक्षात्कार कर लें तो हमारा जन्म व मरण के चक्र से अवकाश होकर हमें मोक्ष व मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है। मुक्ति की अवधि ईश्वर के एक वर्ष अर्थात् ३१,१०,४० अरब वर्षों के बराबर होती है। इतनी अवधि तक जीवात्मा ईश्वर के सान्निध्य में रहकर सुख भोगता है। मोक्ष प्राप्ति का पूरा ज्ञान सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास को पढ़कर प्राप्त किया जा सकता है। सभी मनुष्यों को मोक्ष के विषय में अवश्य जानना चाहिये और इसके लिए प्रामाणिक ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश ही है या वह ग्रन्थ हैं जहां से सत्यार्थप्रकाश की सामग्री का संकलन ऋषि दयानन्द जी ने किया था।

प्राचीन काल में हमारे समस्त ऋषि-मुनि, ज्ञानी व विद्वान सभी मोक्ष को सिद्ध करने के लिए वेद एवं वैदिक शास्त्रों के अनुसार साधना करते थे। अब भी कोई करेगा तो वह इस जन्म व कुछ जन्मों में मोक्ष को अवश्य प्राप्त कर सकता है क्योंकि वेद के ऋषियों ने जो सिद्धान्त दिये हैं वे उनके गहन तप, स्वाध्याय, साधना एवं ईश्वर साक्षात्कार के अनुभव के आधार पर हैं। ऋषि दयानन्द में यह सभी गुण विद्यमान थे, अतः उनके सभी सिद्धान्त भी प्रामाणिक हैं।

वेद व सत्यार्थप्रकाश आदि का अध्ययन करने के बाद यह तथ्य सामने आता है कि हम इस जन्म से पूर्व पिछले जन्म में कहीं मृत्यु को प्राप्त हुए थे। उस जन्म व उससे पूर्व कर्मों के भोग के लिए हमारा यह जन्म हुआ था। इस जन्म में भी वृद्धावस्था आदि में हमारी मृत्यु अवश्य होगी जिसे हम वेद आदि ग्रन्थों के अध्ययन से जानकर मृत्यु के भय से मुक्त हो सकते हैं। वेद स्वाध्याय, यज्ञ, दान, सेवा, साधना व उपासना से हम जीवनमुक्त अवस्था को प्राप्त कर व मोक्ष को प्राप्त होकर अभय व निर्द्वन्द्व हो सकते हैं। आईये, ईश्वरीय निर्भ्रान्त ज्ञान वेद व सत्यार्थप्रकाश आदि ऋषिकृत ग्रन्थों के स्वाध्याय का व्रत लें। उनमें निहित ज्ञान को प्राप्त कर साधना करें और मोक्ष प्राप्ति के साधनों को अपनायें। मृत्यु के भय से मुक्त होकर हम अन्यों में भी जीवन व मृत्यु के रहस्य का प्रचार कर उन्हें भी अभय प्रदान करें।

असन्तोष

एक आदमी की भेंट देवता से हो गई। वह भगवान के सामने अपना दुखड़ा रोने लगा। देवता ने उंगली से एक पत्थर की ओर इशारा किया। पत्थर सोने का बन गया। पर सोने का पत्थर मिलने के बाद भी वह आदमी सन्तुष्ट नहीं हुआ। देवता ने उंगली से शेर की मूर्ति की ओर इशारा किया शेर की मूर्ति भी सोने की बन गई। उस आदमी को फिर भी सन्तोष नहीं हुआ।

देवता ने पूछा-तुम आखिर चाहते क्या हो।

उस आदमी ने कहा-क्या आप मुझे अपनी उंगली दे सकते हैं?

शिक्षा:- जरा सोचें, कहीं आप तो ऐसे नहीं।

-विजय सिहाग 'अलवर'

आपकी रसोई एक आदर्श औषधालय

–लालाराम गुप्त, जनता आयुर्वेदिक औषधि प्रतिष्ठान, कासगंज (उ.प्र.)

परिवार के प्रत्येक सदस्य का स्वास्थ्य उस घर की महिला के ऊपर काफी निर्भर करता है, क्योंकि उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए रसोई परिवार का औषधालय है। भोजन बनाने एवं परोसने जाती महिला की मनो-भावनाओं का भोजन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है अत: प्रत्येक महिला का परम-कर्त्तव्य है कि भोजन बनाते समय उच्च एवं पवित्र विचार मन में रखें और निश्चित समय पर ही भोजन करें। परिवार को स्नेह के साथ भोजन करायें। शुद्ध एवं सात्विक भोजन स्वास्थ्य को परिपुष्ट रखता है, क्योंकि हमारा भोजन ही औषधि है।

ऋतु अनुसार एवं जीवित भोजन यानि की भोजन को अधिक तला-भुना न जाय खटाई, लाल मिर्च एवं तामसिक भोजन का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रात: काल अंकुरित अनाज एवं दालों का प्रयोग करना चाहिए। भोजन सम्बन्धी इन नियमों का महिला को कठोरता से पालन करना चाहिए।

हितकारी भोजन पदार्थों का संयोग:-

१ आम एवं खजूर के साथ दूध का सेवन।
२ खरबूजे के साथ शक्कर (बूरा) या खाण्ड के शर्बत का सेवन।
३ केला खाने के बाद छोटी इलायची का सेवन।
४ चावल के साथ नारियल की गिरी (गोला) का सेवन।
५ मूली के साथ मूली के पत्ते एवं डण्ठल का सेवन।
६ गाजर के साथ मैथी-साग का सेवन।
७ इमली के साथ गुड़ का सेवन।
८ मक्का के साथ मट्ठा का सेवन।
९ अमरुद खाने के बाद सौंफ का सेवन।
१० भोजन खाने के बाद अनार का सेवन।
११ दही के साथ मूंग का यूष, घी एवं शक्कर, शहद या आँवला चूर्ण मिला कर सेवन करना।

हानिकारक भोज्य पदार्थों का संयोग:-

१ दूध के साथ वर्जित पदार्थ:- नमक, गुड़ एवं तिल के बने पदार्थ, तेल में बने पदार्थ, जौं का सत्तू, शहद (मधु), केला, बेल का फल, कैथ का फल, बेर, नारियल, अखरोट, बड़हल, मूली, हरी सब्जियाँ एवं साग, सहजने की फली, कटहल, करौंदा, कुल्थी, उड़द, मोठ, सेम, शराब, इमली, नींबू एवं अम्ल रस वाले फल आदि।

२ प्रात: काल वर्जित फल:- केला, जामुन, बेर, गूलर, ताड़ का फल, इमली, सौंठ (अदरक), अंकोला, चिरौंजी, नारियल का सार व तिल के बने पदार्थ

३ घी एवं शहद को बराबर मात्रा में मिलाकर सेवन नहीं करना चाहिए।

४ दही के साथ वर्जित पदार्थ:- दूध, खीर, पनीर, केला, मूली, खरबूजा, बेल का फल एवं गर्म भोजन का सेवन नहीं करना चाहिए।

५ भोजन के अंत (बाद) में वर्जित पदार्थ:- केला, ककड़ी, कमलनाल, भिस, शालूक, कन्द वाली सब्जियाँ, (आलू, अरबी, कचालू) और गन्ने से बने पदार्थ भोजन से पहले सेवन करने चाहिए।

६ सूर्यास्त के बाद (रात) में वर्जित पदार्थ:- मूली, खीरा, दही, मट्ठा, जौं का सत्तू एवं तिल के बने पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए।

भोजन सेवन सम्बन्धी नियम-

१ भोजन एकान्त में, हाथ-पैर धोकर, प्रसन्नचित व शांति पूर्वक करना चाहिए।
२ एक भोजन से दूसरे भोजन के बीच कम से कम तीन घण्टे का अंतर होना चाहिए।
३ भोजन को खूब चबाकर यानि एक ग्रास को ३२ बार चबा कर खाना चाहिए।
४ पानी भोजन से एक घण्टा पहले या एक घण्टा बाद पीना चाहिए।
५ भोजन के तुरन्त बाद पेशाब (मूत्र) करना चाहिए।
६ दोपहर भोजन करने के बाद लेटना चाहिए। पीठ के बल लेटकर ८ श्वांस, दांयी करवट लेटकर १६ श्वांस तथा बांयी करवट लेटकर ३२ श्वांस लेने चाहिएँ।
७ शाम को भोजन करने के बाद टहलना चाहिए।
८ सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करना चाहिए।
९ किसी भी भोज्य पदार्थ का सेवन करने के बाद कुल्ला अवश्य ही करना चाहिए।
१० शारीरिक व मानसिक थकावट होने पर क्रोध, भय, चिन्ता, शोक एवं परेशानी होने पर भोजन नहीं करना चाहिए।

भोज्य पदार्थों में ६ रस-

१ **मधुर रसः** से रक्त बढ़ता है जैसे-घृत, मधु, केला, खजूर, नारियल, तरबूज आदि। इनमें घृत सर्वश्रेष्ठ है।

२ **अम्ल रसः** से मज्जा बढ़ती है जैसे-आंवला, अनार, नारंगी, नींबू, बड़हल, कैथफल, दही मट्ठा आदि।

३ **लवण रसः** से अस्थि बढ़ती है जैसे-सैंधा लवण, काला नमक, सांभर लवण, समुद्र लवण, यवक्षार। लवण रस में सैंधा लवण सर्वश्रेष्ठ है।

४ **कटु रसः** से मांस बढ़ता है जैसे-हींग, काली मिर्च, गौ-मूत्र, लहसुन, मूली सरसों एवं सौंठ आदि। कटु रस में सौंठ सर्वश्रेष्ठ है।

५ **तिक्त रसः** से चर्बी बढ़ती है जैसे-नीम, चिरायता, गिलोय, परवल, हल्दी, मकोय एवं करन्ज आदि। तिक्त रस में परवल सर्वश्रेष्ठ है।

६ **कषाय रसः** से शुक्र बढ़ता है जैसे-हरड़, जामुन, गूलर, पालक, चौलाई, खैर एवं भिस आदि। कषाय रस में हरड़ सर्वश्रेष्ठ है।

ऋतु चर्या- भारत में ६ ऋतुएँ होती हैं।

१ शिशिर ऋतु (Dewy Season) (माघ-फाल्गुन) इस ऋतु में कफ का संचय होता है। भोज्य पदार्थों में तिक्त रस की वृद्धि होती है। मधुर-अम्ल-लवण रस युक्त भोज्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

२ बसंत ऋतु (Spring Season) (चैत्र-बैशाख) इस ऋतु में कफ का प्रकोप होता है। भोज्य पदार्थों में कषाय रस की वृद्धि होती है। कटु-तिक्त-कषाय रस युक्त भोज्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

३ ग्रीष्म ऋतु (Summer Season) (ज्येष्ठ-आषाढ़) इस ऋतु में वात का संचय एवं कफ का शमन होता है। भोजन पदार्थों में कटु रस की वृद्धि होती है। मधुर रस युक्त भोज्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

४ वर्षा ऋतु (Raining Season) (श्रावण-भादों) इस ऋतु में पित्त का संचय तथा वात का प्रकोप होता है। भोज्य पदार्थों में अम्ल रस की वृद्धि होती है। मधुर-अम्ल लवण रस युक्त भोज्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

५ शरद ऋतु (Begining Season) (आश्विन-कार्तिक) इस ऋतु में पित्त का प्रकोप एवं वात का शमन होता है। भोज्य पदार्थों में लवण रस की वृद्धि होती है। मधुर-तिक्त-कषाय रस युक्त भोज्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

६ हेमन्त ऋतु (Winter Season) (मार्गशीष-पौष) इस ऋतु में पित्त का शमन होता है। भोज्य पदार्थों में मधुर रस की वृद्धि होती है। मधुर-अम्ल-मधुर रस युक्त भोज्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

दिनचर्या सम्बन्धी नियम-

प्रातः ४ से ५ बजे उठकर ताम्बे के बर्तन में रखा हुआ शुद्ध पानी पीना चाहिए। नित्य कर्म-शौच, दातुन-मंजन, व्यायाम, तेल मालिश, स्नान, निस्वार्थ भाव से परम पिता परमेश्वर की अराधना करनी चाहिए। रात्रि में ९ से १० बजे तक परम पिता परमेश्वर का स्मरण करते हुए सो जाना चाहिए। इन नियमों का पालन करने से उत्तम स्वास्थ्य बल और आयु की प्राप्ति होती है और मनुष्य कभी भी रोग ग्रस्त नहीं होता। हम माताओं और बहनों से नम्र निवेदन करते हैं कि वह परिवार को स्वस्थ रखने के लिए छोटे बच्चों को दिनचर्या एवं भोजन सम्बन्धी नियमों का पालन कराये। आज का स्वस्थ बच्चा ही कल का कर्णधार है।

गुणकारी केला

केला एक सामान्य फल है, जो प्रायः सभी को आसानी से प्राप्त हो जाता है। केला संसार के सभी भागों व सभी मौसम में प्राप्त हो जाता है। विवाह के समय अनेक जगह केले के पेड़ मण्डप के चारों कोनों पर लगाये जाते है, क्योंकि इसे पवित्र माना जाता है। केला स्वाद के अतिरिक्त रोगों में भी गुणकारी होता है।

दस्तों में- केला दही के साथ खाने से दस्त, पेचिश, संग्रहणी दूर हो जाती है।

शरीर को मोटा करने के लिए- नियमित रूप से २-३ महीने दो केले खाकर दूध पीते रहने से शरीर का मोटापा बढ़ने लगता है। केला स्वप्नदोष भी दूर करता है।

नकसीर-जिन व्यक्तियों के नाक से खून बहता हो उन्हें चाहिये कि एक गिलास दूध में शक्कर (चीनी) मिलाकर दो केलों के साथ निरन्तर दस दिन सेवन करे, लाभ होगा।

मुंह के छाले- जीभ पर छाले होने पर एक केला दही के साथ प्रातःकाल खाने से मुख के छाले ठीक हो जाते है।

बार-बार पेशाब आना- एक केला खाकर आधा कप आंवले के रस में स्वाद अनुसार चीनी मिलाकर पियो लाभ होगा। केले के तने के रस में थोड़ा घी मिलाकर पिलाने से रुका हुआ पेशाब आने लगता है।

जलने पर- आग से जलने पर केले को पीस कर लगाने से लाभ होता है।

भोजन के बाद केला खाने से शरीर को अधिक ताकत प्राप्त होती है। खाली पेट केला नहीं खाना चाहिए। रात्रि में सोने से पूर्व केला खाना वर्जित है। २-३ से अधिक केले एक समय में न खाये। एक-दो छोटी इलायची खाने से केला पच जाता है।

जानते हो!

❒जितेन्द्र मानव

❖अफजल खान की एक बीवी ने उसे शिवाजी की शरण जाने को कहा तो अफजल खान इतना भड़क गया कि उसने अपनी सारी ६३ बीवियों को मारकर कुएं में फिंकवा दिया।

❖सिर्फ मादा मच्छर ही आपका खून चूसती हैं। नर मच्छर सिर्फ आवाज करते हैं।

❖आप को कभी भी यह याद नहीं रहेगा कि आपका सपना कहाँ से शुरू हुआ था।

❖भारत १७वीं शताब्दी के आरंभ तक ब्रिटिश राज्य आने से पहले सबसे सम्पन्न देश था।

❖संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। यह कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा है।

❖दुनिया का सबसे ऊंचा क्रिकेट मैदान हिमाचल प्रदेश के चायल स्थान पर है। इसे समुद्री सतह से 2444 मीटर की ऊंचाई पर 1893 में तैयार किया गया था।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रस्तुति : आस्था आर्या

☺बादशाह की इच्छा थी कि उसका जनाजा खूब धूमधाम से निकले और उसके मरने के बाद उसका जनाजा खूब धूमधाम से निकला। यह देखकर दिवंगत बादशाह का चहेता दरबारी बोल उठा-काश आज बादशाह होते तो अपने जनाजे को देखकर कितना खुश होते।

☺मरीज-डॉ॰ साहब, मुझे कोई भी बात याद नहीं रहती।
डॉ॰- ऐसा कब से है?
रोगी- जी, क्या कब से है?

☺ चार मित्र पिकनिक पर जाने की योजना बना रहे थे-
पहला: मैं मिठाई ले आऊँगा।
दूसरा: मैं सब्जी ले आऊँगा।
तीसरा: मैं रोटियाँ ले आऊँगा।
चौथा: मैं अपने तीनों भाईयों को ले आऊँगा।

☺बाबू-भाई तुम इस फिल्म का टिकट तीसरी बार खरीद रहे हो। आखिर मामला क्या है?
भोलू-क्या करूँ साहब, जो आदमी गेट पर खड़ा है, न जाने उसकी मुझसे क्या दुश्मनी है। जब मैं टिकट लेकर अंदर जाना चाहता हूँ, वह आधी टिकट फाड़ देता है।

☺पड़ोसी-तुम कहते हो, तुमने एक थप्पड़ मारा था। मेरा बेटा कहता है, तुमने पांच थप्पड़ मारे थे।
लड़का-जी, मारा तो एक ही थप्पड़ था, मगर उसकी सेहत देखते हुए उसे पांच किस्तों में बांट दिया था।

☺विनेश- तुम अपने को तानसेन से बड़ा कैसे मानते हो?
रमन-वह तो गाना गाकर दीपक जलाता था, मैं माचिस से ही दीपक जला देता हूँ।

बालवाटिका

❒सुमेधा

प्रहेलिका:

प्रहेलिका

❍ टिमटिम करते कितने प्यारे
चंदा मामा के रखवारे

❍टिकटिक करती चलती जाऊँ,
सबको सही समय बतलाऊँ
देर होने से तुम्हें बचाऊँ
समय का पाबन्द बनाऊँ

❍ हवा का एक खिलौना, जब हाथ छूट जाए
आसमान में उड़ता जाए, बच्चा हाथ देखता रह जाए

❍ आर चलूँ पार चलूँ
सब्जियों को फाड़ चलूँ

❍ फिरती कली-कली रंग-बिरंगी प्यारी-प्यारी
हर फुलवारी देख मुझे बच्चे करते पकड़ने की तैयारी

❍ ऊपर जाऊँ, नीचे आऊँ
सावन में मैं धूम मचाऊँ

❍बिना खाल का एक जानवर, जिस के मुंह पर बाल, रंगों का वह भोजन करता, नीला, पीला, लाल।
तारे, घड़ी, गुब्बारा, चाकू, तितली, झूला, ब्रश

विचार कणिका:

❒प्रतिष्ठा

●प्रत्येक दशा में सूर्य उदय होने से पहले उठो। सूर्य उदय होने पर सोते रहने वाले अभागे मनुष्य का सब कुछ नष्ट हो जाता है।

●वाणी से सदा मीठे और हितकारी वचन बोलो।

●निर्दयी मनुष्य कभी धर्मात्मा नहीं हो सकता। जहां दया है वहां धर्म है।

●अण्डा और मांस मनुष्यों का आहार नहीं है। जो व्यक्ति अपने मन, बुद्धि शुद्ध रखना चाहते हैं, उन्हें भूलकर भी इनका सेवन नहीं करना चाहिए।

●लोग छोटी बुराई को बुराई नहीं समझते और अनदेखा कर देते हैं लेकिन छोटी बुराई ही बड़ी बुराई का रूप ले लेती है जैसे घड़े का छोटा छिद्र भी पूरे भरे घड़े को खाली कर देता है और छोटा छेद भी बड़ी नाव को डुबो देने के लिए पर्याप्त होता है।

राजा का बकरा

किसी राजा के पास एक बकरा था। एक बार उसने ऐलान किया की जो कोई इस बकरे को जंगल में चराकर तृप्त करेगा, मैं उसे आधा राज्य दे दूँगा, किंतु बकरे का पेट पूरा भरा है या नहीं, इसकी परीक्षा मैं खुद करूँगा।

यह सुनकर एक आदमी राजा के पास आकर कहने लगा कि बकरा चराना कोई बड़ी बात नहीं है। वह बकरे को लेकर जंगल में गया और सारा दिन उसे घास चराता रहा। सोचा- अब तो इसका पेट भर गया होगा। वह राजा के पास गया। राजा ने थोड़ी सी हरी घास बकरे के सामने रखी तो बकरा उसे खाने लगा। इस पर राजा ने कहा- तूने इसे पेट भर खिलाया ही नहीं वर्ना वह घास क्यों खाने लगता? बहुत जनों ने बकरे का पेट भरने का प्रयत्न किया किंतु ज्यों ही दरबार में उसके सामने घास डाली जाती तो वह फिर से खाने लगता।

एक विद्वान् ब्राह्मण ने सोचा- इस ऐलान का कोई तो रहस्य है, तत्व है। मैं युक्ति से काम लूँगा। वह बकरे को चराने के लिए ले गया। जब भी बकरा घास खाने के लिए जाता तो वह उसे लकड़ी से मारता। सारा दिन में ऐसा कई बार हुआ। बकरे को पक्का विश्वास हो गया कि यदि मैं घास खाने का प्रयत्न करूँगा तो मार खानी पड़ेगी। शाम को वह ब्राह्मण बकरे को लेकर राजदरबार में लौटा।

राजा से कहा- मैंने इसको भरपेट खिलाया है। अब बिलकुल घास नहीं खायेगा। कर लीजिये परीक्षा।

राजा ने घास डाली लेकिन बकरे ने खाना तो दूर, उसे देखा और सूंघा तक नहीं। राजा ने ब्राह्मण से उसकी युक्ति पूछी और उसे पुरस्कार देकर विदा किया।

मित्रो, यह बकरा हमारा 'मन' ही है। बकरे को घास चराने ले जाने वाला ब्राह्मण 'आत्मा' है। राजा 'परमात्मा' है। मन को मारिए नहीं, मन पर अंकुश रखिए। मन का स्वभाव है कि यह तृप्त होने पर भी सन्तुष्ट नहीं होता। मन सुधरेगा तो जीवन भी सुधरेगा। अत: मन को 'विवेक' और 'वैराग्य' रूपी लकड़ी से निरन्तर नियन्त्रण में रखना चाहिये।

गीतिका

रिक्शे में चढ़ चींटी बोली-
धूप बड़ी है तेज-।
चूहे चाचा तेज चलाओ-
जाना है कालेज।।
चाचा बोले डरती हो तुम
जरा धूप सहने में-
तब तो मैं अनपढ़ ही अच्छा-
क्या रखा पढ़ने में?

प्रबोध कुमार गोविल

तीन आदमी

गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रहे शिष्यों में आज काफी उत्साह था, उनकी बारह वर्षों की शिक्षा आज पूर्ण हो रही थी और अब वे अपने घरों को लौट सकते थे। गुरु जी भी अपने शिष्यों की शिक्षा-दीक्षा से प्रसन्न थे और गुरुकुल की परंपरा के अनुसार शिष्यों को आखिरी उपदेश देने की तैयारी कर रहे थे।

उन्होंने ऊँची आवाज में कहा- आप सभी एक जगह एकत्र हो जाएं, मुझे आपको आखिरी उपदेश देना है।

गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए सभी शिष्य एक जगह एकत्र हो गए।

गुरु जी ने अपने हाथ में कुछ लकड़ी के खिलौने पकड़े हुए थे। उन्होंने शिष्यों को खिलौने दिखाते हुए कहा- आपको इन तीनों खिलौनों में अंतर ढूँढने हैं।

सभी शिष्य ध्यानपूर्वक खिलौनों को देखने लगे, तीनों लकड़ी से बने बिलकुल एक समान दिखने वाले गुड्डे थे। सभी चकित थे कि भला इनमे क्या अंतर हो सकता है? तभी किसी ने कहा- अरे, ये देखो इस गुड्डे के में एक छेद है। यह संकेत काफी था, जल्द ही शिष्यों ने पता लगा लिया और गुरु जी से बोले- गुरु जी इन गुड्डों में बस इतना ही अंतर है कि एक के दोनों कानों में छेद है, दूसरे के एक कान और एक मुंह में छेद है और तीसरे के सिर्फ एक कान में छेद है।

गुरु जी बोले- बिलकुल सही। उन्होंने धातु का एक पतला कान के छेद में डाला। तार पहले गुड्डे के एक कान से होता हुआ दूसरे कान से निकल गया, दूसरे गुड्डे के कान से होते हुए मुंह से निकल गया और तीसरे के कान में घुसा पर कहीं से निकल नहीं पाया।

गुरु जी ने कहा- इनकी तरह ही आपके जीवन में तीन तरह के व्यक्ति आयेंगे। पहले- जो आपकी बात एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देंगे, आप ऐसे लोगों से कभी अपनी समस्या साझा न करें।

दूसरे- जो आपकी बात सुनते हैं और उसे दूसरों के सामने जा कर बोलते हैं, कभी अपनी महत्त्वपूर्ण बातें इन्हें ना बताएँ।

तीसरे- वे लोग हैं जो आपकी बात को सुनते हैं और उन पर विचार करते हैं। इन पर आप भरोसा कर सकते हैं, विचार विमर्श कर सकते हैं, सलाह ले सकते हैं, यही वे लोग हैं जो आपकी ताकत है और इन्हें आपको कभी नहीं खोना चाहिए। -संजय चुघ

सत्यार्थ प्रकाश

अविद्या अंधकार का जो करता पर्दाफाश है।
सत्यार्थ प्रकाश है, सत्यार्थ प्रकाश है।।

सत्यार्थ प्रकाश को ऋषि दयानंद ने रचाया है,
सत्य और असत्य क्या ये खोलकर समझाया है,
जीवन निर्माण की ये औषध सुनो खास है-१

प्रश्न और उत्तर देकर ऋषिवर समझावते,
बाल, वृद्ध, युवा इससे लाभ सभी ठावते,
चक्कर में ना फंसता कभी ये जिसके भी पास है-२

गुरुदत्त से नास्तिक को आस्तिक बनाया जिसने,
अनेकानेक पतितों को है ऊपर उठाया इसने,
दुर्गुण और दुर्व्यसन भागा होकर के निराश है-३

सत्यार्थ के नाम से ही जो नाक भों चढ़ाते थे,
नर्क कुंड में पड़े हुये जन क्या-२ पीते खाते थे,
महात्मा बनाकर भर दी उनमें सुवास है-४

१४ समुल्लास सुनो पृथक-२ गोला है,
जिसके द्वारा पोप गढ पर धावा गया बोला है,
अंड, बंड पाखंड का किया गया नाश है-५

कवि 'श्री पाल' कहे सत्यार्थ भुलाना नहीं,
नित्य प्रति स्वाध्याय करो मिले ऐसा- खजाना नहीं,
साधु, संत, गृहस्थी सबको सत्य- की तालाश है-६

-श्रीपाल आर्योपदेशक, वैदिक मिशनरी,
आर्य भवन-खेड़ा हटाना, जनपद-बांगपत(उ०प्र०)

कर ले उसपे भरोसा समर्पित

जिन्दगी चार दिन का सफर है जिन्दगी का भरोसा नहीं है।।
दुःख को सहने की आदत भी डालो इस खुशी का भरोसा नहीं है।।

आदमी आज अपना है कोई कल पराया भी हो जाएगा वो
प्रेम परमात्मा से ही करलो, आदमी का भरोसा नहीं है।।१

इस जमाने की परवाह छोड़ो ये जमाना तो चलता रहेगा।
बेखुदी के भी कुछ गीत गा लो इस खुदी का भरोसा नहीं है।२

जिन्दगी एक दरिया है जिसमें जो संभल कर चले तो तरोगे।
डूब जाओगे बहके तो किञ्चित् इस तरी का भरोसा नहीं है।।३।

जो शरण कोई तूझको न दे तो तू शरण ले ले परमात्मा की।
कर ले उसपे भरोसा समर्पित गर किसी का भरोसा नहीं है।।४।

भजन

-चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक

है श्रेष्ठ कर्म संसार में, करो यज्ञ सभी नरनारी।
यज्ञ से शुद्ध भवन होता है, यज्ञ से शुद्ध पवन होता है,
यज्ञ से शुद्ध तन-मन होता है,
यज्ञ होता जिस परिवार में-वहाँ कभी न होवे हारी।।१।।
सामग्री में गुग्गल रलालो, उचित मात्रा में घृत मिलालो।
फिर उसकी तुम आहुति डालो
यज्ञ की धुंवाधार में-कट जाएँ सब बीमारी।।२।।
जो व्यक्ति नित यज्ञ करता है-औरों के दुःख को हरता है।
पाप करण से भी डरता है-
लग जाता है उपकार में-उसे मिलती है सरदारी।।३।।
प्राणिमात्र का भला यही है, और जीने की कला यही है।
चन्द्रभान की सलाह यही है,
जुट्या रहे वेद प्रचार में-तेरी मिटी ऐष्णा सारी।।४।।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः

विषय वासना में फंस के क्यों नष्ट करो जीवन नै।
यू मन नाश करणिया हो सै काबू राखो मन नै।।
यू मन सै चालाक चोरटा बचियो इस के डर तै।
पता नहीं यू के करवादे भोले भाले नर तै।
भाइयां नै भाइयां तै खो दे घर वालां नै घर तै।।
बड़े बड़े घबराते देखे इसके जुल्म कहर तै।।
चलता रहता है हरदम ना खाली बैठे क्षण नै।।१।।
मल विक्षेप आवरण इसके दोष कहे जावें सैं।
जिनमें फंस कै जीव अनेकों कष्ट सहे जावें सैं।।
इनमैं फंस कै दुःखधारा में सदा बहे जावें सैं।
इनतै बच कै ज्ञान मिलै फिर मोक्ष गहे जावें सैं।।
ज्ञान कर्म और उपासना की सही राह चालण नै।।२।।
काम, क्रोध मद लोभ मोह ये इसमें डेरा डालें।
जब चाहवैं हम सही चलाणा तब ये उलटे चालें।।
यैं दुश्मन हों सैं माणस के कदे घाट ना घालें।
पल दो पल में यैं माणस नैं अपणा दास बणालें।।
मन का दास बण्यां पाछे के बाकी कहण सुणन नैं।।३।।
योग मार्ग में लादो मन नैं गर काबू करणा सै।
तीन ऐष्णा त्याग हृदय में परमेश्वर शरणा सै।
परमपिता के पास लगो जो भवसागर तरणा सै।।
इन्द्रियों के वश में होकै के जीणा मरणा सै।।
मोक्ष वरो **सहदेव समर्पित** छोड़ो जन्म मरण नै।।४।।

गीत

यह है अपना प्यारा देश।

❒डॉ० परमलाल गुप्त

यह है अपना प्यारा देश।
प्रकृति सुन्दरी सदा बदलती रहती है परिवेश।
कहीं शीत तो कहीं ग्रीष्म है कहीं बरसता पानी,
तूफान, बाढ़, सूखे की भी होती है मनमानी;
विभिन्नता में सुदृढ़ एकता की मिसाल है देश।
यह है प्यारा देश।।
घोर विषमता, जातिवाद का बहता गन्दा पानी,
भ्रष्टाचार बना जीवन की भद्दी एक कहानी;
भिखमंगा छवि बनी देश की जो पहुँचाती ठेस।
यह है प्यारा देश।।
सोने की चिड़िया था पहले कहलाता था दानी,
लूटा खूब इसे दुनिया के देशों ने की हानी;
जलता रहा देश यह तब से ले स्वतंत्रता वेश।
यह है प्यारा देश।।
जो था आगे विश्व-पटल पर सबसे बढ़कर ज्ञानी,
सभ्यता-संस्कृति, मानवता की गरिमा जिसने जानी;
दिया इसी ने सारे जग को जागृति का संदेश।
यह है प्यारा देश।।
जिसने मानव-धर्म सिखाया नहीं बना अभिमानी,
जिसने कीर्ति पताका अपनी फहरायी कल्याणी;
ऋषियों की वाणी ने खोला जीवन का क्या वेश।
यह है प्यारा देश।।
इसके लाखों चरण बढ़े थे स्वतंत्रता बलिदानी,
खोया गौरव पुनः प्राप्त करने की इसने ठानी;
खत्म नहीं संघर्ष आज भी देशी याकि विदेश।
यह है प्यारा देश।।
बना दिया इण्डिया इसे जो था भारत लाशानी,
सत्ता के चंद दलालों ने कर अपनी मनमानी;
भाषा तक अपनी नहीं रही जो है जीवन उपदेश।
यह है प्यारा देश।।
कमर कस रहा अब यह भारत मानी भूल पुरानी,
महाशक्ति बनने की इसने आज प्रतिज्ञा ठानी;
गौरव बढ़े देश का अपना तब हो संतोष विशेष।
यह है प्यारा देश।।
सीमा पार पड़ोसी इसके चाह रहे वीरानी,
सफल न होंगे कभी इरादे याद करेंगे नानी;
तने हुए हैं सिर अब अपने नवयुग का उन्मेष।
यह है प्यारा देश।।
बढ़ो-बढ़ो का स्वर गूँजा हैं राह न अब अनजानी,
पा लेंगे हम वह ऊँचाई जो उत्कर्ष निशानी;
चमकेगा अब सबसे पहले आंगन में कमलेश।
यह है प्यारा देश।।

-*'नमस्कार' बस स्टैण्ड के पीछे, सतना-* ४८५००१

वैदिक हाइकू

कर साफ
तो हो सफा
तेरा मन

बना मंत्र
को सफरी
कर सफर

लगा ध्यान
हृदयाकाश में
ध्यान कर

तू आर्य है
बन श्रेष्ठ
बना श्रेष्ठ

कर दान
बन दाता
यज्ञ होता

कर यज्ञ
बन पुरोहित
विज्ञ हो

कर संध्या
दो समय
भूले बिन

सुन चर्चा
कर चिंतन
हो बोध

कर उपासना
बैठ पास
ईश्वर के

जरूरत समान
पूजा पृथक्
पंथ भिन्न

वैदिक धर्म
आधार सबका
है एक

❒**लतिका चावड़ा** 'स्वर्णलतिका'
महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विवि,
वर्धा, महाराष्ट्र- ४४२००३

हाइकु= जापानी छंद/तीन पंक्तियों में सार्थक बात/ विचार रखने की शैली

कृष्ण उठाओ चक्र

❒सहदेव समर्पित

घोर-निराशा ने इस धरती, की गरिमा घेरी है।
कृष्ण उठाओ चक्र कहो अब, काहे की देरी है।।

त्राहि त्राहि कर रही मनुजता, कहक रही दानवता,
पाखण्डों की छांव तले है पाप जा रहा पलता,
मर्यादा के रक्षक पग पग दिखा रहे दुर्बलता,
धर्म-रक्षकों को मर कर भी मिलती नहीं सफलता।
न्याय दया सिद्धान्त साधना छल बल की चेरी है।।

खून पसीना करने वालों के घर है कंगाली।
झूठ-कपट के व्यवहारों की बंधक है खुशहाली।
वे दीपों की लाज लूटकर- मना रहे दीवाली,
तुम कहते शिशुपाल की अब तक हुई नहीं सौ गाली!
मन के समराङ्गण में कब से बज रही रणभेरी है।
कृष्ण उठाओ चक्र कहो अब काहे की देरी है!!

Unfiled Notes Page 29

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर

प्रवेश-सूचना

महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक से सम्बद्ध आर्ष पाठविधि के केन्द्र महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में नूतन प्रवेश हेतु प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। प्रवेश हेतु परीक्षा तिथियाँ इस प्रकार हैं-

१ और १५ अप्रैल (प्रथम एवं तृतीय रविवार)

६ और २० मई (प्रथम एवं तृतीय रविवार)

३ और १७ जून (प्रथम एवं तृतीय रविवार)

❖प्रवेशार्थी कम से कम पंचम कक्षा उत्तीर्ण और अविवाहित होना अनिवार्य है।

❖प्रवेशार्थी स्कूल त्याग का प्रमाण पत्र तथा अपना फोटो साथ लायें।

❖प्रवेश शुल्क २०००/- केवल एक बार

❖भोजन शुल्क १८०००/- वार्षिक (यह शुल्क प्रति छह मास में ९०००/- की दो किश्तों में भी दिया जा सकता है।)

शेष जानकारी हेतु निम्नलिखित चलभाष नम्बरों पर सम्पर्क करें-

9416055044 (आचार्य) 9416661019 (कार्यालय)

शांतिधर्मी परिसर में मनाया गया होली महोत्सव

जींद, नरवाना मार्ग स्थित शांतिधर्मी परिसर में होली का पर्व वैदिक रीति से हर्षोल्लास से मनाया गया। सहदेव शास्त्री ने कहा कि इस पर्व का मूल नाम नव शस्येष्टि पर्व है और यह हिरण्यकश्यप की कथा से पहले भी मनाया जाता रहा है। उन्होंने कहा कि नई फसल के आगमन पर उसको बांटकर खाने के लिये और भगवान का आभार प्रकट करने के लिये सामूहिक विशाल यज्ञ हवन किये जाते थे, जिससे पर्यावरण शुद्धि होती थी और परोपकार की भावना बढ़ती थी। सहदेव शास्त्री ने कहा कि हमारी संस्कृति बांटकर खाने की संस्कृति है और होली जैसे त्योहारों का विधान इसी भावना को मजबूत करने के लिये किया गया था जो आज अपसंस्कृति के रूप में बदलता जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सुनील शास्त्री उचाना ने विधि विधान से यज्ञ सम्पन्न कराया जिसमें सात किलोग्राम शुद्ध घी, पुष्कल सामग्री और नये अन्न की आहुतियाँ दी गईं। उकलाना से पधारी बहन उषा देवी, बहन विनीता गुलाटी, प्रमुख समाजसेवी सूरजमल जुलानी, मास्टर पृथ्वीसिंह ने भी बुराई पर अच्छाई की विजय के प्रयास करने के बारे में अपने विचार रखे। कुमारी सुमेधा आर्या, प्रतिष्ठा आर्या व आस्था ने भावुकतापूर्ण भजन प्रस्तुत किये। यजमान दम्पतियों के रूप में सर्व श्री नरेश कुमार सोनी, शिवप्रकाश सैनी, अशोक कुमार आर्य, रवीन्द्र सोनी, सत्यव्रत, श्री सुरेन्द्र शर्मा, डॉ० अश्विनी कुमार आर्य ने आहुतियाँ प्रदान कीं। मुख्य रूप से सर्वश्री जगदीश सिन्धु, वेदपाल कोथ, रामचन्द्र, आर्य नरेन्द्र सोनी, सतबीर दहिया, विक्रम शास्त्री, राजकुमार खटकड़, नरेन्द्र छापड़ा, शमशेर आर्य, सुलतान आर्य, महेन्द्रपाल, विजयपाल, प्रा० अमनदीप तंवर, सत्यवान शास्त्री, सतबीर तंवर, वेदप्रकाश जांगड़ा, बलवान इन्दौरा, प्रिं० सुदेश शर्मा, सुमन मान, शारदा, कमलेश देवी, सुमित्रा गहल्याण आदि सहित सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ प्रदान कीं।

पोर्ट ब्लेयर में वेद कथा

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित हुए कार्यक्रम

14 से 21 फरवरी तक पोर्ट ब्लेयर के जंगली घाट के राधा कृष्ण मंदिर में वेदों पर उपदेश प्रवचन का प्रोग्राम रखा गया। होशंगाबाद से आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी चेन्नई तमिलनाडु के सेंट्रल आर्यसमाज में प्रचार करते हुए यहाँ आये। मेरठ के पं० अजय आर्य भजनोपदेशक भी आये। जनता को आर्यसमाज की उत्सव विधि प्रथमतः देखने का अवसर प्राप्त हुआ। चेन्नई आर्यसमाज के प्रधान श्री धनञ्जय जोशी जी भी पधारे। तमिल हिंदी व अंगरेजी का साहित्य निःशुल्क बांटा गया। बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दीनदयाल जी ने बंगाली भाषा के प्रचारक आचार्य योगेश शास्त्री को बंगाली साहित्य लेकर रवाना किया जिससे बंगाली श्रोताओं को सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ मिल सके। रंगाचांग ग्राम के उच्चतर मा वि एवं रविन्द्र बँगला सी से स्कूल में उपदेश भजन का कार्यक्रम भी रखा गया। मिलेट्री एरिया ब्रिजगंज में गायत्री परिवार का शिवरात्रि उत्सव मनाया जा रहा था सो वहां भी वेदों पर उपदेश देने का अवसर मिला। पोर्ट ब्लेयर आकाशवाणी में एक वार्ता व पोर्टब्लेयर दूरदर्शन में भी पुरुषार्थी जी के 3 प्रवचन उपदेश रिकॉर्ड किये गए। ध्यातव्य है इसके पूर्व सितम्बर २०१६ में आचार्यश्री पुरुषार्थी जी आर्य समाज का गठन कर गए थे। बीच सभा के अधिकारी भी आये और अपना आशीर्वाद प्रदान कर गए थे। प्रधान श्री सुरेश चतुर्वेदी जी ने सभी को धन्यवाद किया। सभी को सूचना दी गयी कि रविवार का सत्संग निरंतर जारी है। सेलुलर जेल तथा दूसरे द्वीपों पर पर्यटन के लिए सभी अतिथियों की व्यवस्था आर्यसमाज की तरफ से की।

सुरेश आर्य
मंत्री
आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर

देश भर में मनाया गया नव संवत्सरोत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस

वैदिक संस्कृति की प्राचीनता के प्रमाणभूत मानव संवत् का पर्व विभन्न स्थानों पर धूमधाम से आयोजित किया गया। आर्यसमाज के स्थापना दिवस के संदर्भ में भी महर्षि दयानन्द के अवदान को याद किया गया और नवीन संकल्प के साथ आगामी कार्यों में जुट जाने का आह्वान किया गया। जींद में जिला वेद प्रचार मण्डल के आधान में सार्वजनिक स्थान पर आयोजित भव्य कार्यक्रम में पण्डित दिनेश पथिक एवं आचार्य शिवकुमार जी ने शतशः श्रोताओं के मध्य आर्य संस्कृति का गौरव गान किया। विवेकानन्द फाऊण्डेशन द्वारा विभिन्न ५० स्थानों पर आयोजित यज्ञों के क्रम में ग्राम दरियावाला में श्री सहदेव शास्त्री ने वैदिक पद्धति से यज्ञ सम्पन्न कराया एवं नव संवत् के ऐतिहासिक पक्ष पर प्रकाश डाला। फिरोजपुर झिरका से प्राप्त सूचना के अनुसार आर्य समाज के कार्य कत्तओं द्वारा ग्राम साकरस में आर्यसमाज स्थापना दिवस व नवसंवत्सरोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। लखनऊ बेतवा अपार्टमेंट गोमतीनगर विस्तार में आर्यसमाज गोमतीनगर लखनऊ द्वारा डॉ० निष्ठा वेदालंकार के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ सम्पन्न किया गया। आर्यसमाज सिरसा के तत्त्वावधान में बृहत् यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें श्री अजयकुमार बांगा व श्री अनूपकुमार ने सपत्नीक मुख्य यजमान का दायित्त्व वहन किया। कैथल में स्त्री आर्य समाज द्वारा यज्ञ सत्संग का आयोजन हुआ। आर्यसमाज बिंझौल जिला पानीपत में श्री सचिन आर्य प्रधान के नेतृत्व में यज्ञ व सार्वजनिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। रेवाड़ी में भारत स्वाभिमान न्यास (जिला प्रभारी मा० दयाराम आर्य राज्य शिक्षक पुरस्कार विजेता) के पांचों संगठनों द्वारा नव संवत् २०७५ व महिला दिवस के उपलक्ष्य में प्रतियोगिता का आयोजन एवं २३ मार्च को शहीदी दिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। आर्यसमाज बीकानेर राजस्थान द्वारा नवसंवत्सरोत्सव व आर्य समाज स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया जिसमें डॉ० शिवकुमार जी मुक्ष अतिथिडॉ० नन्दिता जी सिंघवी विशिष्ट अतिथि रहींकार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी सुखानन्द जी ने की। कन्या गुरुकुल फतूही की कन्याओं ने रोमांचक व्यायाम प्रदर्शन किया। प्रधान श्री महेश आर्य ने संचालन किया।

श्रुति धाम कन्या गुरुकुल

भड़ताना (जींद)

(दूरभाष- ९८१२९ २४०३५)

❖शिक्षा स्वास्थ्य एवं चरित्र निर्माण का केंद्र
❖पांचवी से ९ वीं कक्षा तक प्रवेश आरंभ
❖शुद्ध एवं सुसंस्कारित वातावरण
❖छात्राओं के भोजन के लिए जैविक अन्न व गौ दुग्ध की उत्तम व्यवस्था।
❖गुरुकुल चोटीपुरा से शिक्षित-शिक्षिकाएं
❖प्रवेश परीक्षा के आधार पर होगा
❖प्रवेश परीक्षा १ अप्रैल से १० अप्रैल तक

संस्थापक
आचार्य आत्म प्रकाश जी
कुलपति गुरुकुल कुंभाखेड़ा
हिसार

प्रबंधक
डॉक्टर सुमेधा जी एवं
डॉक्टर सुकामा जी
कन्या गुरुकुल चोटीपुरा

फार्म - IV (देखिए नियम-8)

प्रकाशन का नाम : शांतिधर्मी
प्रकाशन का स्थान : जीन्द (हरियाणा)
प्रकाशन की अवधि : मासिक
मुद्रक का नाम : सहदेव
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द
प्रकाशक का नाम : सहदेव
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द
सम्पादक का नाम : सहदेव
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर,सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र की कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं।

सहदेव
756/3, आदर्श नगर,
सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द

मैं सहदेव एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त प्रविष्टियां मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास से सत्य हैं।

सहदेव
प्रकाशक के हस्ताक्षर

क्या भगतसिंह-- पृष्ठ १४ का शेष

कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या उनके लिये तेरी न्यायसभा बन्ध हो गई है? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता, और उनकी पुकार नहीं सुनता? क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता? जिससे ये इन बुरे कामों से बचें।' (गोकरुणानिधि:)

भगतसिंह की नास्तिकता का प्रचार करने वालों को इस तरफ भी ध्यान देना चाहिए। प्रसिद्ध लेखक श्री कुलदीप नैयर ने 'शहीद भगतसिंह के क्रांति-अनुभव' में लिखा है- 'भगतसिंह के पिता ने उसे बताया कि महात्मा गांधी ने अंग्रेज सरकार को यह कह दिया है कि अगर इन तीनों नवयुवकों को फांसी पर लटकाना है तो उन्हें कराची में हो रहे कांग्रेस सम्मेलन से पहले लटका देना चाहिए। भगतसिंह ने पूछा कि कांग्रेस का कराची सम्मेलन कब हो रहा है? उसके पिता ने कहा कि मार्च महीने के अंत में। भगतसिंह ने इसके उत्तर में कहा कि यह तो बहुत प्रसन्नतादायक बात है, क्योंकि गर्मियां आ रही हैं, इसलिए काल-कोठरी में सड़कर मरने से फांसी पर चढ़ जाना अपेक्षाकृत अच्छी बात है। लोग कहते हैं कि मौत के बाद बहुत अच्छी जिंदगी मिलती है परन्तु मैं पुन: भारत में ही जन्म लूंगा, क्योंकि मैंने अभी अंग्रेजों का और सामना करना है। मेरा देश जरूर आजाद होगा।'

श्री सुभाष रस्तोगी ने 'क्रांतिकारी भगतसिंह' में एडवोकेट प्राणनाथ के सन्दर्भ से लिखा है- फिर मैंने (भगतसिंह से) पूछा- 'आपकी अंतिम इच्छा क्या है ?' उनका उत्तर था 'बस यही कि फिर जन्म लूं और मातृभूमि की और अधिक सेवा करूं।'

पाठकवृन्द! क्या पुनर्जन्म मानने वाला नास्तिक होता है? क्या अन्याय, अत्याचार से पीड़ित जन के आंसू पोंछकर उन्हें प्रसन्नता देने वाला नास्तिक होता है? क्या समूचे राष्ट्र का हित करने वाला नास्तिक होता है? क्या परोपकार के लिए प्राण देने वाला नास्तिक होता है?

यौनापराध-- पृष्ठ १८ का शेष

लंगोटी के पक्के कहे जाते हैं।

वातावरण तो लगभग सबके लिये एक है। लेकिन उसमें रहने वाले इन्सानों का व्यवहार भिन्न भिन्न है। इसमें कोई दो राय नहीं कि ये लक्षण वातावरण व खरणे का मिला जुला रूप होते हैं। देश के आनुवांशिकी वैज्ञानिकों को इस पर शोध करना चाहिए।

आधुनिक समाज में बढ़ती विकृति और आपराधिक प्रवृत्ति के लिये जिम्मेवार कौन है? भोगवादी पाश्चात्य संस्कृति की आँधी रोक पाने में हम विफल रहे हैं। इसने पैसे की ऐसी अंधी दौड़ को जन्म दिया है कि जिसने नैतिक, सामाजिक, मानवीय और पारिवारिक मूल्यों को तहस नहस कर डाला। संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवार आ गए। एक ओर विद्यालयों में संस्कार विहीन शिक्षा, दूसरी ओर एकल परिवारों में माता पिता के पास समय का अभाव! ऐसे में अच्छे आचरण कैसे विकसित होंगे? दादा दादी या नानी जो बच्चों को शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाते थे आज स्वयं अस्तित्त्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। साफ है कि आज के हालात के लिये हम स्वयं दोषी हैं। इस मामले में समाज सुधारने और इन्सान की मनोवृत्ति बदलने के लिये समाज के सभी तबकों को आगे आना होगा। तभी इस प्रकार की शर्मनाक घटनाओं को रोका जा सकेगा। इसके साथ साथ तेजी से समाप्त हो रहे भारतीय सामाजिक व नैतिक मूल्यों को भी पुनर्जीवित करना होगा। इसके लिए विशेष रूप से खाप पंचायतों को आगे आकर अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए।

मर्यादा पुरुषोत्तम-- पृष्ठ ११ का शेष

मुनियज्ञ में बाधक राक्षसों के संहारक हैं। विश्वामित्र के शब्दों में वे मनुष्यों को ही नहीं, पशु-पक्षियों तक को अपने स्वभाव एवं शील से सुख देने वाले हैं। वन जाते हुए मार्गस्थ ग्रामों के नर नारियों की भी वे चिन्ता करते हैं। निषादराज को अपना मित्र बनाते हैं, शबरी के बेरों की सराहना करते नहीं अघाते, वन्य प्रणियों को अपना सखा एवं सहायक बना लेते है।

राम लोकसत्ता और लोकमत में गहन आस्थावान हैं। लोकरंजक एवं मर्यादापालक आदर्श राजा के जो गुण मानव कल्पना में आ सकते हैं वे सब राम में थे। राम का यह काव्यमय चरित अभिनन्दनीय होने के साथ-साथ सदा-सर्वदा अनुकरणीय माना गया है और आज के युग में तो उसकी नितान्त आवश्यकता है। हमने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के साथ-साथ आदर्श भी माना है किन्तु आज उस आदर्श के अनुकरण में प्रमाद और शिथिलता दिखाई दे रही है, यही हमारे अध:पतन का कारण है। यदि यत् किंचित् भी इस ओर ध्यान दिया जाए तो स्थिति पलट सकती है। इसीलिए स्व० मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा-

राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।।

मानिनी-- (पृष्ठ २० का शेष)

नम्रतापूर्वक उत्तर दिया- 'स्वामी, स्त्रियों की बातों पर क्या कहूँ-ये तो पता नहीं क्या कह दिया करती हैं और पता नहीं क्या कर दिया करती हैं।'

अभी वे दोनों बातें कर रही रहे थे कि वीरसिंह की दृष्टि सामने खूंटी पर टंगे पुरुष सैनिक के वस्त्रों पर पड़ी। वीरसिंह चौंक गया-वह कुछ समझ पाता तभी उसने वहाँ किसी पुरुष सैनिक की जूतियाँ देखीं-वह पहली नजर में पहचान गया- सुन्दरबाई भी उसी की ओर एकटक देख रही थी, लेकिन वीरसिंह के हृदय में उफनते लावे को वह नहीं समझ पा रही थी।

वीरसिंह ने आगे बढ़कर देखा तो उसे अपना नाम खुदी हुई वह तलवार भी दिखाई दे गई, जो उसने रतनसिंह को भेंट की थी। अब उसका सन्देह विश्वास में बदल गया- 'कुलटा, कुल कलंकिनी' वह दहाड़ उठा- 'मेरे उस गद्दार मित्र के साथ रंगरलियाँ मनाती रही, और स्त्री की महानता का दंभ भरकर! बता कहाँ है वह तेरा रतनसिंह-आज मेरी तलवार उसका खून पीकर रहेगी।'

सुन्दरबाई मन ही मन मुस्करा उठी-लेकिन बाहर से भयातुर होने का अभिनय करती हुई बोली- 'महाराज, एक क्षण ठहरिए- मेरे ऊपर ऐसा घृणित लांछन न लगाईए, मैं अभी रतनसिंह को आपके सामने प्रस्तुत करती हूँ।' वह अन्दर चली गई- वीरसिंह दाँत पीसता रहा-थोड़ी देर में सुन्दरबाई सैनिक वस्त्र धारण कर बाहर आई और मुसकराकर बोली-'लीजिए महाराज', मैं ही रतनसिंह हूँ।'

उसकी मुसकराहट देखकर वीरसिंह का क्रोध उफन गया- 'कुलच्छनी, मेरी आँखें धोखा नहीं खा सकतीं। आज तेरे ये त्रिया-चरित्र तुझे नहीं बचा सकते- तूने बल्लभीपुर के राजवंश पर दाग लगाया है-मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूँगा।'

इतना कहकर वीरसिंह ने झपटकर सुन्दरबाई के केश पकड़ लिये, झटका देकर जमीन पर गिरा दिया और गर्दन पर तलवार रख कर उसे मारने को तैयार हो गया।

सुन्दरबाई ने इतनी बात बढ़ने की कल्पना न की होगी- वह अपनी मौत को सामने देखकर बोलने लगी- 'महाराज यकीन कीजिए, मैंने ही रतनसिंह बनकर आपकी प्राण रक्षा की थी- मैं ही आपका दोस्त रतन सिंह थी।'

वीरसिंह का क्रोध शांत न होते देखकर सुन्दरबाई ने पूछा-'महाराज कोई ऐसी बात या घटना--? जिससे आपको यकीन हो जाए कि मैं ही रतनसिंह हूँ।'

वीरसिंह को जैसे कुछ याद आया-उसने सुन्दरबाई के दाहिनी कलाई से वस्त्र हटाकर देखा तो जैसे उसे साँप सूंघ गया। उसके हाथ पर अपना नाम खुदा हुआ देखकर वह चकरा गया। यह तो रतनसिंह की पहचान थी-वीरसिंह एक झटके से खड़ा हो गया-उस पर जैसे घड़ों पानी पड़ गया हो-उसकी गर्दन नीची हो गई। काफी देर तक दोनों जड़वत् खड़े रहे- नेत्रों से नेत्र मिले- सुन्दरबाई स्नेह से मुस्करा दी। वीरसिंह के चेहरे पर भी मुस्कान आ गई। अहंकार चूर चूर हो गया। उसने संकुचित स्वर में कहा-

'सुन्दरबाई, तुम वास्तव में ही महान नारी हो, तुम जीत गई-मैं हार गया। क्या तुम मुझे क्षमा नहीं करोगी?'

सुन्दरबाई ने उनके ओठों पर अंगुली रख दी-'ऐसा न कहिए, महाराज! मैं तो आपकी परिणीता दासी हूँ, मुझे मेरे खोए हुए महाराज मिल गए-यही मेरी जीत है। और महाराज! जिस बात पर आप अप्रसन्न थे, वह बात मैंने नहीं, चिन्तामणि नाम की दासी ने कही थी। मेरे विचार से तो महाराज! स्त्री और पुरुष दोनों ही गृहस्थ रूपी गाड़ी के पहिये हैं। दोनों का समान महत्त्व है। किसी एक के बिना इस सुन्दर संसार की कल्पना भी भयावह है।'

'सत्य है, देवी! किन्तु मनु महाराज ने यूँ ही नहीं कहा है कि गृहिणी के कारण ही घर घर होता है। हमारी संस्कृति में उसे गृहलक्ष्मी, गृहदेवी कहकर यूँ ही नहीं पूजा जाता है। मैंने आपको जो कष्ट दिया, उसके लिये--'

कहते कहते दोनों के नेत्र उन्मीलित हो गए। द्वार के पीछे खड़ी सुन्दरबाई की निजी सेविका उछलती हुई प्रांगण की ओर दौड़ गई। वातायन में बैठे कबूतर के जोड़े ने आश्वस्त होकर फिर से गूटर गूं करना प्रारम्भ कर दिया।

त्याग भाव (पृष्ठ २१ का शेष)

रम रहे हैं। माता की गोद में बैठे हुये हम इस प्रकार अविश्वासी हों, हमसे बढ़कर अधर्मी कौन हो सकता है? आज से ही प्रण करो कि हम शुद्ध भाव से प्रातः और सायं पिता की शरण में शुद्ध हृदय लेकर उपस्थित हों। सारे अन्दर के भावों की भेंट उसके आगे चढ़ायें। हम और क्या भेंट ले जा सकते हैं? कौन सी सांसारिक वस्तु है जिस पर हमारा अधिकार है। अगर सारा ऐश्वर्य परम ईश्वर का है तो हमारे पास अपने आत्मा के अतिरिक्त और क्या है? इसलिये सिवाय इसके कि उसके सर्वभावों को ईश्वर की भेंट करें और हम क्या कर सकते हैं?

हे शान्ति निकेतन! हमारे अशान्त हृदय, ईर्ष्या और द्वेष से दग्ध हो रहे हैं। फल भोग की इच्छा ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा। आप कृपा करो, दया करो, इस अशांत हृदय के अन्दर शांति के अमृत जल की वर्षा करो, ताकि अपने हित-अहित को समझकर हम सब आपकी शरण में आवें और अपने कर्त्तव्य का ज्ञानपूर्वक पालन करते हुए आपके अनन्त धाम के अधिकारी बन सकें।

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

एवं

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

के संयुक्त तत्त्वावधान में

12 मई 2018, शनिवार को एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

का आयोजन टांटिया विश्वविद्यालय श्रीगंगानगर राजस्थान में किया जा रहा है।

मुख्य विषय : समावेशी और गुणात्मक शिक्षा : चुनौतियाँ और मुद्दे

उप विषय

1. उच्च शिक्षा में अभिगम्यता, गुणवत्ता व रोजगार।
2. शिक्षा में सम्पूर्ण गुणात्मक प्रबंध TQM व NAAC की भूमिका।
3. जीवन कौशल, शिक्षा, कौशल विकास व व्यक्तित्व विकास।
4. सुविधा वंचित वर्ग, अल्पसंख्यक व अन्य पिछड़ी जातियों में शिक्षा।
5. अक्षमता, विकास व शिक्षा (हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी आदि)।
6. समावेशी शिक्षा में भाषा (हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी आदि) का महत्व।
7. समावेशी शिक्षा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में।
8. समावेशी शिक्षा नीतियां, चुनौतियाँ एवं कार्यक्रम।
9. समावेशी शिक्षा में प्रशिक्षण एवं अनुसंधान।
10. समावेशी शिक्षा के विभिन्न आयाम।
11. समावेशी शिक्षा हेतु विद्यालयी तैयारियां।
12. उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के लिये ई-प्रौद्योगिकी।
13. समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व।
14. सांस्कृतिक गुणवत्ता बनाम ई-संस्कृति।

प्रतिभागी सम्बन्धित विषयों पर अपने शोध पत्र (हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी आदि भाषा में) टाईप करवाकर पंजीकरण शुल्क प्राध्यापक 550 रू., शोधार्थी 400 रू. सहित दिनांक 30/04/2018 तक ई-मेल ginapk222@gmail.com पर भेजें। श्रेष्ठ शोध पत्रों का प्रकाशन ISBN अंकित पुस्तक में किया जायेगा जिसे आप लागत मूल्य पर खरीद सकते हैं।

संयोजिका :
डॉ. रेखा सोनी, उपप्राचार्या
शिक्षा विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)
मो. 9828531975

प्रतिभागी आवास की सुविधा के लिए
यूनिवर्सिटी गैस्ट हाऊस इंचार्ज/डीन
फिजिकल एजुकेशन से सम्पर्क करें :
डॉ. सुरजीत सिंह कस्वा
मो. 9414432611

संयोजक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सचिव, गुगनराम सोसायटी रजि.
सम्पादक, बोहल शोध मंजूषा
मो. 9466532152

प्रिय पाठक

कई बार साधारण डाक से भेजी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ हम तक नहीं पहुंच पाती हैं। आप अपनी सम्मतियाँ, सुझाव, प्रतिक्रियाएँ, आगामी कार्यक्रमों की सूचनाएँ ई मेल या व्हाट्स् एप अथवा पंजीकृत डाक से भेजें। डाक से कोई सामग्री भेजें तो उसकी प्रति अपने पास सुरक्षित अवश्य रख लें। शान्तिधर्मी के वार्षिक व आजीवन सदस्यता शुल्क में रजिस्टरी का खर्च शामिल नहीं है। जहाँ १० या अधिक ग्राहक एक स्थान पर रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगाते हैं, उनका रजिस्टरी खर्च हम वहन करते हैं। आप सहयोग बनाये रखेंगे, प्रार्थना है।

व्हाट्स् एप नम्बर : 99963 38552

Email- shantidharmijind@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

Indus Global Academy

Celebrating Excellence ....

(Day Boarding & Residential School)

Preparing Students For Competitive World

OUR MISSION

To transform children into national assets with integrated high level inputs on academics. competitive exams & personality development.

Admission Open
Class 6th to 12th

- ✓ *Day Boarding & Residential*
- ✓ *Committed and Qualified Faculty*
- ✓ *Premium Study Material*
- ✓ *Latest Sport Infrastructure*
- ✓ *Transport Facility*
- ✓ *Preparation of IIT/NEET/CLAT/NTSE/ NDA/Olympiads alongwith CBSE curriculum*
- ✓ *Latest Sport Infrastructure*
- ✓ *Safe & Secure, Pollution Free Campus*

E-mail : igakinana@gmail.com
Website : www.indusglobalacademy.in
Helpline : 9728704032

15th Km. Milestone, Rohtak Road, Kinana

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (मार्च, २०१८) P.R. No. : PKL 150-A/2017-19

इंडस ग्लोबल एकेडमी

A Unit of Indus Group of Institutions

IIT/NEET/CLAT/NTSE/NDA/ OLYMPIADS

DECIDE
COMMIT
SUCCEED

Admission Open

Classes 6th Onwards

15th Km. Milestone, Rohtak Road, Kinana

Helpline : 9999029125